

आंकुब



राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़— 160017





कुर्सियों पर बांए से :

श्री कमल देव बरपग्गा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी, श्री जसविंदर शर्मा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी, श्री फैसल इमाम, महालेखाकार, श्री गिरधारी लाल हलवाई, वरिष्ठ उपमहालेखाकार, श्री विनय कुमार गर्ग, सहायक लेखा अधिकारी।

खड़े हुए बांए से :

श्री महेन्द्र सिंह, क.हि.अ., श्रीमती एकता, क.हि.अ.,
श्री यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज, क.हि.अ.



अंकुश

राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़— 160017



प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	:	श्री फ़ैसल इमाम महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017
संरक्षक	:	श्री गिरधारी लाल हलवाई वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
मुख्य संपादक	:	श्री जसविन्दर शर्मा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
वरिष्ठ संपादक	:	श्री कमल देव बरपग्गा वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	:	श्री विनय कुमार गर्ग सहायक लेखा अधिकारी
संपादन सहयोग	:	श्रीमती एकता कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री महेन्द्र सिंह कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
मुख पृष्ठ	:	चण्डीगढ़ में स्थित शहीदी स्मारक
अंक	:	108 से 109 वां संयुक्तांक
प्रतियां	:	तीन सौ प्रतियां
प्रकाशक	:	राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़- 160017
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा।
मुद्रक	:	कैपिटल ग्राफिक्स एस.सी.ओ. 133-135, सैक्टर- 17 सी, चण्डीगढ़।

अनुक्रमणिका

❖ प्रकाशन विवरण		2
❖ वर्ष 2018-19 हेतु, कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग संबंधी मुख्य लक्ष्य		4
❖ मुख्य संरक्षक का संदेश		5
❖ संपादकीय		6
❖ पाठकों के पत्र		7-11
आलेख		
❖ भाषा विवाद	यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज	13-14
❖ विजातीय द्रव्य	विनय कुमार गर्ग	15-17
❖ भारत की ऐतिहासिक नगरी- अमृतसर	रंजू महाजन	18-20
❖ भारत-चीन संबंध	कुमारी खुशबू	21-23
❖ जल ही जीवन है	हरबंस कौर औबराय (सेवानिवृत्त)	26
❖ पहेलियां	तुष्टी गर्ग (बाल रचनाकार)	27
कविता		
❖ दो गजलें	रिकू कश्यप	29
❖ अकेला हुआ इन्सान	महेन्द्र सिंह	30
❖ वक्त तो लगता है	एकता धानिया	31
❖ गरीब की व्यथा	अनूप डांगरा	34
❖ ऋतुओं की कहानी उनकी जुबानी	सुनील कुमार गुप्ता	35
❖ गर्मी	अरनव (बाल रचनाकार)	36
❖ इन्सान	संपदा नारायणी (बाल रचनाकार)	37
❖ राष्ट्रभाषा हिन्दी	शिवांश कश्यप (बाल रचनाकार)	38
❖ अंकुर	काजल कुमारी	39
कहानी		
❖ अम्मा क्यों रोती है	जसविंदर शर्मा	41-44
❖ दोष किसका	संजय कुमार आर्यन	45-47
कार्यालयीन गतिविधियां		
❖ कार्यालय समाचार/ खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियां		48
❖ नियुक्तियां, पदोन्नतियां एवं सेवा निवृत्तियां।		49-51

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं। रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार हैं।

वर्ष 2018—19 हेतु, कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग संबंधी मुख्य लक्ष्य

कार्य विवरण	“क” क्षेत्र	“ख” क्षेत्र	“ग” क्षेत्र
हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		
वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%



संदेश

‘अंकुर’ पत्रिका के 108वें संयुक्तांक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के माध्यम से सभी रचनाकारों की लेखन प्रतिभा तथा राजभाषा हिन्दी के प्रति उनकी निष्ठा अभिव्यक्त होती है। इसके लिए मैं उन्हें साधुवाद देता हूँ। पत्रिका में नन्हे रचनाकारों का योगदान यह इंगित करता है कि भावी पीढ़ी के हृदय में भी हिन्दी के लिए अपार स्नेह है।

पत्रिका की महत्ता को देखते हुए पत्रिका को आकर्षित, सुंदर एवं सार्थक बनाने के लिए अच्छी रचनाओं के साथ-साथ पृष्ठों संबंधी गुणवत्ता को भी बढ़ाने का प्रयास किया है। आशा करता हूँ कि लगातार अपनी गौरवशाली यात्रा पर अग्रसर होती हमारी विभागीय पत्रिका ‘अंकुर’ राजभाषा के प्रति दिए दायित्व की प्राप्ति में इसी प्रकार अपना योगदान देती रहेगी।

राजभाषा के प्रति समर्पित ‘अंकुर’ की निरंतरता का श्रेय संपादक मंडल व रचनाकारों की शब्द साधना के साथ-साथ सभी पाठकों को भी जाता है। अतः आप सभी को भी हार्दिक साधुवाद।

‘अंकुर’ के इस नवीन रूप में प्रस्तुत अंक के प्रकाशन पर मेरी ओर से आप सबको हार्दिक शुभकामनाएं।

फ़ैसल इमाम

महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यूटी, चण्डीगढ़-160017



सम्पादक की कलम से...

यह अत्यन्त ही हर्ष का विषय है कि अंकुर पत्रिका का पिछला अंक सुधी पाठकों को काफी रोचक व सार्थक लगा जिसके लिए सम्पूर्ण अंकुर परिवार हृदय से आभारी है। पाठकों से प्राप्त पत्रों में पत्रिका की भिन्न-भिन्न रचनाओं की प्रशंसा प्राप्त हुई जिससे यह ज्ञात होता है कि अंकुर पत्रिका की अधिकांश रचनाएं स्तरीय हैं जो पाठकों को लुभाने में सफल रही।

राजभाषा विभाग सरकारी कामकाज में हिन्दी भाषा के प्रयोग को सुनिश्चित करने हेतु कार्यालयों के लिए वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है जिसमें हिन्दी प्रयोग संबंधी लक्ष्य निर्धारित होते हैं। यदि हम हिन्दी भाषा को आत्मसात कर लें, हिन्दी भाषा को अपनी भाषा मान लें, साथ ही हिन्दी में कार्य करके गौरवान्वित महसूस करें तो निश्चित तौर पर वार्षिक कार्यक्रमों के लक्ष्यों को प्राप्त करना तो सहज होगा ही अपितु हिन्दी उस स्थान को ग्रहण कर पाएगी जो राजभाषा का होना चाहिए।

अंकुर पत्रिका का यह 108वां संयुक्तांक अपने आप में कई विधाएं समाहित किए हुए है जिसमें कुछ परिपक्व रचनाकारों की कृतियां हैं, कुछ नन्हे रचनाकारों के मासूम उदगार हैं व स्वास्थ्य संबंधी लेख भी हैं। आशा है कि पूर्व अंकों की भांति अंकुर के इस अंक को भी पाठकों का भरपूर स्नेह व आशीर्वाद प्राप्त होगा। ये पाठकों के पत्र ही हैं जो अंकुर परिवार को नित नये आयाम स्थापित करने की प्रेरणा देते हैं और उसी प्रेरणा स्वरूप व हमारे अंकुर परिवार के मुख्य संरक्षक — महालेखाकार महोदय की उदारता के फलस्वरूप विभागीय पत्रिका अंकुर को नये कलेवर में प्रस्तुत किया जा रहा है जो कि अंकुर परिवार के लिए अत्यंत ही गर्व का विषय है। आशा है कि ये नया सुखद परिवर्तन पाठकों को पसंद आएगा। इन्ही शुभकामनाओं के साथ यह नवीन अंक समर्पित है।

जय हिन्दी! जय भारत!

विनय कुमार गर्ग

सहायक लेखा अधिकारी



पाठकों के पत्र



आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' का 105—107वां उत्कृष्ट अंक हमारे कार्यालय को प्राप्त हुआ। आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशंसनीय लेख एवं सुन्दर कविताएं लिखने का सराहनीय प्रयास किया है। श्री रंजू महाजन द्वारा लिखित 'वाणी का प्रभाव एवं महत्व' श्री रिकू कश्यप द्वारा लिखित 'दो गजलें', श्री जसविंदर शर्मा द्वारा लिखित 'पहली तारीख' सराहनीय व प्रशंसनीय हैं।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका 'अंकुर' के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी शुभकामनाएं।

कार्यालय, महालेखाकार (आ.एवं रा.क्षे.ले.प.)
गुजरात, नवरंगपुरा, अहमदाबाद।

हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 105—107 वें संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ आभार। पत्रिका का कलेवर अपनी भव्यता लिए हुए है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं रोचक होने के साथ ज्ञानवर्धक एवं विषयानुकूल हैं। कुमारी रुबी का लेख 'सोशल मीडिया', श्री रिकू कश्यप की 'दो गजलें', श्री दिनेश कुमार तिवारी की कविता 'महंगाई और भ्रष्टाचार' एवं संतोष धीमान की कहानी 'अपना पराया' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, रचनाओं के उचित चयन एवं सम्पूर्ण सम्पादन हेतु सम्पादकीय परिवार को बधाई।

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र ले.प.)
राजस्थान, जयपुर।



पाठकों के पत्र



आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 105-107वें संयुक्तांक अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। पत्रिका का यह अंक भी अन्य अंकों की तरह बेहतर है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने रचनाओं का बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णन किया है। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है तथा भविष्य में पत्रिका के भीतर के रंगीन पृष्ठों के साथ अगले अंक के और भी निखरकर आने की संभावनाएं व्याप्त हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर रॉक गार्डन का चित्र बहुत ही सुंदर है तथा अंतिम पृष्ठ पर दिया गया 'फतेह बुर्ज' स्मारक का चित्र भी सुंदर है।

पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-2,
महाराष्ट्र, नागपुर।

हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 105-107वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में समाहित संपूर्ण रचनाएं ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी लगी। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के उन्नयन हेतु विभाग का यह कार्य स्तुत्य एवं सराहनीय है। पत्रिका का कलेवर पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के अंदर की झलकियां अत्यंत सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं रचनाओं के चयन, संकलन तथा प्रकाशन हेतु संपादक तथा सम्पादकीय परिवार के सभी सदस्यों को बधाई और पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय, महालेखाकार (सा. व सा. क्षे.ले.प.),
कर्नाटक, बैंगलूरु।



पाठकों के पत्र



आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 105—107वें संयुक्तांक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका के मुखपृष्ठ का छायाचित्र 'चण्डीगढ़ में स्थित रॉक गार्डन के झरने का दृश्य' बहुत सुंदर है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रोचक, शिक्षाप्रद व प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों से अवगत कराने वाले पत्रिका में सम्मिलित सभी छायाचित्र सुंदर हैं। लेख 'वाणी का प्रभाव एवं महत्व', 'पाश्चात्य संस्कृति के प्रति मेरा नजरिया' सराहनीय एवं कहानी 'अल्बर्ट आइंस्टीन' प्रेरणादायक हैं। 'पहली तारीख' कहानी में उधार पैसे लेने वालों की मनोदशा का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है। 'अपने-पराये' मर्मस्पर्शी है। 'हिन्दी', 'नदी की व्यथा', एवं 'महंगाई और भ्रष्टाचार' विशेष रूप से सराहनीय कविताएं हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

कार्यालय, महालेखाकार (ले. व ह.)— 2,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित राजभाषा हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 105—107वें संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। आवरण पृष्ठ बहुत सुंदर है। संकलित सभी लेख एवं रचनाएं सरस एवं पठनीय हैं। सुश्री रंजू महाजन का लेख 'वाणी का प्रभाव एवं महत्व' तथा श्री विनय कुमार गर्ग का लेख 'युवा अनुशासनहीनता' वास्तव में संबंधित विषयों पर ज्वलंत विचार प्रस्तुत करते हैं। श्रीमती जीवन आशा की 'उम्र की ऐसी की तैसी' एवं महेन्द्र सिंह की 'कैंटीन एक रिफ्रेश बटन' कविताएं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के कुशल संपादन हेतु हमारे कार्यालय की तरफ से हार्दिक बधाईयां।

कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.)—प्रथम,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।



पाठकों के पत्र



आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' की प्राप्ति हुई। अतः आभार स्वीकार करें। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पाठकों के लिए प्रभावशाली, रोचक, ज्ञानवर्धक, उच्चकोटि एवं मन को लुभाने वाली हैं। पत्रिका में सुश्री रंजू महाजन जी ने अपने लेख 'वाणी का प्रभाव एवं महत्व' के माध्यम से बड़ी ही कुशलता से जीवन में वाणी का कुशल प्रयोग को समझाया है, सोशल मीडिया के विभिन्न पहलुओं को कुमारी रुबी ने अपने लेख 'सोशल मीडिया' में बखूबी समझाया है। श्री जसविंदर शर्मा जी की कहानी 'पहली तारीख' काफी रोचक है एवं महेन्द्र सिंह जी की कविता कैटीन: एक रिफ्रेश बटन' विशेष रूप से सराहनीय एवं पठनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा भी उत्तम है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका 'अंकुर' के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगंधा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय, महालेखाकार (ले.प.),
पंजाब एवं यूटी चण्डीगढ़।

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 105-107वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। इस पत्रिका में प्रकाशित कहानियां/लेख व कविताएं बहुत ही रोचक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का संपादकीय अध्याय बहुत ही प्रेरणादायक है। विशेष रूप से इस पत्रिका में श्री रिकू कश्यप द्वारा लिखी गयी 'दो गजलें' एवं श्रीमती संतोष धीमान द्वारा लिखी गई कहानी 'अपना-पराया' बहुत ही प्रशंसनीय है। पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

पत्रिका प्रेषित करने हेतु पुनः धन्यवाद।

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (सा. व सा.क्षे.ले.प.),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता।



पाठकों के पत्र



आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 105-107वें संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई। चण्डीगढ़ स्थित रॉक गार्डन के झरने से सुसज्जित पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत सुंदर एवं मनोहारी है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं जैसे 'वाणी का प्रभाव एवं महत्व', 'सोशल मीडिया', 'युवा अनुशासनहीनता' लेख, 'दो गजलें', 'महँगाई और भ्रष्टाचार' तथा 'नदी की व्यथा' कविताएं एवं 'अपने-पराए', 'पंचायत पति' और 'पहली तारीख' कहानियां रोचक व उत्कृष्ट हैं। अंकुर पत्रिका का विमोचन, हिन्दी पखवाड़ा समारोह की झलकियों के चित्र बहुत सुंदर हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

महालेखाकार का कार्यालय (लेखा परीक्षा)-3,
महाराष्ट्र, मुंबई।

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी
सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी,
उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती।
—सुभाषचंद्र बोस

आलेख



भाषा विवादः निरर्थक प्रतिस्पर्धा



यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज

भाषा क्या है? सरल शब्दों में भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा का प्रयोग विचारों के आदान-प्रदान में होता है। विश्व के समस्त प्राणियों में मानव ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो अपनी बुद्धिमत्ता की वजह से संवाद के लिए भाषा का प्रयोग करता है। विश्व में वर्तमान में लगभग 5000 भाषाएँ प्रचलित हैं। भाषा और बोली की परिभाषा में मूलभूत अंतर होने की वजह से इनकी ठीक-ठीक गणना करना थोड़ा कठिन है। भाषा की प्राथमिक इकाई बोली है। क्षेत्रीय स्तर पर भिन्न-भिन्न बोलियों का प्रयोग होता है। जैसे पूर्वी उत्तरप्रदेश और बिहार में भोजपुरी, मैथिली, अवधी, बुंदेली, खड़ी बोली, ब्रजभाषा, बघेली, हरियाणा में हरियाणवी, हिमाचल प्रदेश में पहाड़ी, उत्तराखंड में गढ़वाली, कुमाउँनी, राजस्थान में मारवाड़ी आदि बोलियाँ बोली जाती हैं। बोलियों के व्याकरण एवं लिपि के मानकीकरण पर भाषा का निर्माण होता है। भाषा द्वारा विचारों का आदान-प्रदान लिखित और मौखिक रूप में किया जाता है।

संविधान के आठवें अध्याय में 22 भारतीय भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। साथ ही भारत सरकार ने छह भारतीय भाषाओं को उनके पुरातत्वीय

एवं साहित्यिक महत्व के आधार पर "शास्त्रीय भाषा" का दर्जा प्रदान किया है। ये भाषाएँ हैं—1. तमिल 2. संस्कृत 3. तेलुगू 4. कन्नड़ 5. मलयालम 6. ओड़िया। किसी भाषा को सीखना एक क्षेत्र विशेष की संस्कृति को सीखने के समान है। किसी क्षेत्र की भाषा को समझे बिना हम वहाँ के लोगों को नहीं समझ सकते और न ही उनसे कोई व्यावहारिक आदान-प्रदान किया जा सकता है। जब आप किसी क्षेत्र में जाकर वहाँ के लोगों से उनकी भाषा में बात करते हैं तो आप आसानी से उनके हृदय में अपना स्थान बना लेते हैं। किसी भाषा की विलुप्ति अपने साथ एक सांस्कृतिक धरोहर को भी गुमनाम कर जाती है।

स्वतंत्रता के पश्चात देश के कई हिस्सों में रह-रहकर भाषायी विवाद उठते रहे हैं। राज्यों का पुनर्गठन भी कमोबेश भाषा के आधार पर किया गया है। स्वयं की भाषा को दूसरे की भाषा से श्रेष्ठतर बताने की होड़ हर जगह दिखाई देती है। दक्षिण के राज्य हिंदी तो उत्तर के राज्य अंग्रेजी थोपे जाने का विरोध करते रहे हैं। यह सत्य है कि किसी भी समाज पर किसी भाषा को बलात् थोपा नहीं जा सकता। किसी भी समाज का श्रेष्ठतर विकास उसके स्वयं की भाषा में ही हो सकता

है। अनेक शिक्षाविदों ने अपने अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि बच्चों को प्राथमिक स्तर की शिक्षा अनिवार्यतः उनकी मातृभाषा में ही देनी चाहिए। इससे न केवल बच्चे विषयों को अच्छी तरह समझते हैं बल्कि उनमें मौलिक चिंतन—मनन का विकास होता है। उच्च शिक्षा के स्तर पर यदि दूसरी भाषा में ही उचित पाठ्यक्रम उपलब्ध हो तो उस भाषा में शिक्षा ग्रहण की जा सकती है। तब तक मस्तिष्क का इतना विकास हो चुका होता है कि वह दूसरी भाषा में भी विषयों को समझ सके। किंतु स्वतंत्रता के 70 वर्षों के पश्चात भी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उच्च स्तर की शिक्षा जैसे चिकित्सा, अभियांत्रिकी, प्रबंधन इत्यादि की पठनीय अध्ययन सामग्री का उपलब्ध न होना चिंता का विषय है। इस संदर्भ में अभी काफी काम होना बाकी है। शिक्षा मंत्रालय और अनुवाद ब्यूरो को यह कार्य गंभीरता से एवं युद्धस्तर पर पूरा करना चाहिए।

जहाँ तक अन्य भाषाओं के विरोध का प्रश्न है, मेरा मत है कि व्यक्ति आसानी से 2—3 भाषाएँ सीख

सकता है। अपनी नौसेना एवं बैंक की सेवा के दौरान मैंने यह महसूस किया कि प्रशिक्षण संस्थानों में उन कर्मचारियों को दूसरे सहकर्मियों से मिलने—जुलने में ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ता है जिन्हें हिंदी नहीं आती। सामान्य स्थानों पर भी वार्तालाप के लिए हिंदी का ही अधिकतर प्रयोग किया जाता है। आज अंग्रेजी और हिंदी क्रमशः व्यावसायिक और संपर्क की भाषा बन गए हैं। दोनों ही भाषाओं का ज्ञान व्यावहारिक जरूरतों की वजह से आवश्यक हो गया है। आज दक्षिण एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र के कई युवा हिंदी सीखना चाहते हैं ताकि उन्हें किसी भी स्तर पर समझौता न करना पड़े। अतः परस्पर टकराव की बजाय हमें समन्वय की नीति को अपनाना चाहिए। कोई भी भाषा किसी अन्य भाषा से अधिक श्रेष्ठ या गौण नहीं है। सभी भाषाएँ इस देश की महान सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग हैं। भाषा का स्वभाव लोगों को तोड़ना न होकर जोड़ने का होता है।



राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है:
—महात्मा गांधी



विजातीय द्रव्य



विनय कुमार गर्ग

पाठकों को आलेख का विषय पढ़कर ये भ्रम हो सकता है कि यह लेख जरूर भौतिक विज्ञान से जुड़ा होगा क्योंकि मैं भी जब तक प्राकृतिक चिकित्सा से नहीं जुड़ा था तो मेरी सोच भी ऐसी ही थी। परन्तु यहां यह विजातीय द्रव्य हमारे भौतिक शरीर की एक अशुद्धि है और जैसा कि नाम से ही विदित होता है कि विजातीय द्रव्य मतलब भिन्न जाति का द्रव्य।

प्राकृतिक चिकित्सा का सबसे पहला सिद्धांत है कि सभी रोग एक, कारण एक, निवारण भी एक, जबकि वर्तमान समय में हम देखते हैं कि दवा की बड़ी-बड़ी कंपनियां प्रत्येक दो-तीन महीने के अंतराल पर एक नई बीमारी का अविष्कार कर देती हैं या यूं कहें कि प्रत्येक दो-तीन महीने के अंतराल पर हमें समाचार पत्रों के माध्यम से पता चलता है कि अमुक नाम की नई बीमारी का पता चला है। जबकि प्राकृतिक चिकित्सा का पहला सिद्धांत तो सभी बीमारियों को, उनके कारणों को व उनके निवारण को भी एक ही मानता है तो क्या ये सिद्धांत गलत हैं? बिल्कुल नहीं, वो कैसे? वो ऐसे—क्योंकि प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार हमारी सभी बीमारियों का कारण एक ही है और वह है शरीर में विजातीय द्रव्यों का संग्रह होना। इस विजातीय द्रव्य में

दूषित वायु, दूषित रक्त, मृत कोशिकाएं, अपाच्य खाद्य पदार्थ, दूषित मल—मूत्र, कफ तथा पसीना आदि आते हैं जो हमारे शरीर में अलग—अलग स्थानों पर एकत्र होकर विभिन्न बीमारियों का कारण बनते हैं। शरीर में इनके संग्रह के कुछ कारण हैं जैसे— असंतुलित आहार, शारीरिक श्रम की कमी, भोजन में मैदा, तले—भुने खाद्य पदार्थ व मिर्च—मसालों का अधिक प्रयोग आदि। इस प्रकार के आहार विहार व खान—पान से भोजन अधपचे रूप में आंतों में जमना शुरू हो जाता है, फिर उसी अधपचे भोजन को हमारी आंते सोख कर उसे सारे शरीर में फैला देती है, जिससे हमारे शरीर के विभिन्न अंगों में यह विजातीय द्रव्य जमा होने लगता है और अलग—अलग अंगों में यही विजातीय द्रव्य अलग—अलग रोगों के नाम से जाना जाता है। जैसे:— साधारण जुकाम से लेकर उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, अल्सर, शुगर व मोटापा आदि बीमारियों की गिनती अंतहीन है। प्राकृतिक चिकित्सा में इन सभी रोगों को एक मानते हुए इनका निवारण भी एक ही माना गया है और वह है शरीर को विजातीय द्रव्यों से मुक्त करना। इसके लिए सर्वप्रथम उनके संग्रह के कारणों को दूर करना होगा तथा अपने आहार में 80 प्रतिशत क्षारीय व 20 प्रतिशत अम्लीय भोजन अपनाना होगा।



इस विजातीय द्रव्य की गंभीरता अमेरिकियों द्वारा किए एक अनुसंधान से स्पष्ट होती है जिसमें कुछ अमेरिकी डॉक्टरों ने एक-एक करके 284 लाशों का परीक्षण किया। इन रोगियों की मृत्यु भिन्न-भिन्न रोगों से हुई थी। डॉक्टरों ने उन लाशों की बड़ी आंत का परीक्षण करके देखा कि 284 लाशों में से 256 की बड़ी आंतें सड़े हुए मल से भरी हुई थी। उनमें से किसी-किसी का मलाशय मल से भरकर दोगुना हो गया था। फिर डॉक्टरों ने उन मल की दीवारों को छुरी से तराशा तो पाया उन मलों के भीतर विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े कई कीड़े अपना घर बना कर निवास कर रहे हैं। किसी-किसी घर में उनके अण्डे भी पाए गए। किसी-किसी आंत में कीड़ों ने घर बनाकर आंत की दीवारों में घाव पैदा कर दिए थे। परीक्षा के दौरान यह भी पाया गया कि उनमें से कितनों के मलाशय के अंदर मल सूखकर, आंतों की दीवार में स्लेट (पत्थर) की तरह कठोर होकर चिपक गया था। और सबसे बड़े आश्चर्य की बात यह है कि मृत्यु से पहले इन लोगों का मल त्याग बंद हो गया हो, ऐसा भी नहीं था। इस अनुसंधान से हमने देखा कि 284 में से 256 शरीरों में कोष्ठबद्धता

(कब्ज) पायी गई, जो कि करीब 90% है जिससे हमें स्वयं के प्रति भी अनुमान लगाना कठिन नहीं होगा कि हम 90% वाले हिस्से में आते हैं या बाकी बचे 10% में आते हैं। भले ही हम खुश होने के लिए स्वयं को 10% वाले हिस्से में माने, परन्तु हमारे रोजमर्रा के डॉक्टरों के चक्कर व दवाइयों के लंबे-लंबे बिल हमारे शरीर में विजातीय द्रव्यों की उपस्थिति को नकार नहीं सकते। यह पहचानने के लिये कि हमारे शरीर में विजातीय द्रव्य है या नहीं उसके कुछ स्थूल लक्षण हम स्वयं भी पहचान सकते हैं। उसके लिये हमारे चारों उत्सर्जी अंगों को परखना होगा। सर्वप्रथम फेफड़े— क्या हमारी सांसों के साथ बाहर निकलन वाली वायु दुर्गंध पूर्ण है? तत्पश्चात हमारी त्वचा— क्या हमारी त्वचा से निकलने वाला पसीना असामान्य रूप से दुर्गंधकारी है? तत्पश्चात हमारा मूत्र— क्या हमारा मूत्र विसर्जन अल्प है? पीला है? गाढ़ा है या असामान्य तरीके से दुर्गंधकारी है? और अंत में स्वमल परीक्षण — क्या हमें मल त्याग में समय लगता है? मल में असामान्य रूप से दुर्गंध या मल की मात्रा अल्प है? या मल चिप-चिपी है? और यदि इनमें से कुछ उत्तर हां हैं तो हमें कोष्ठबद्धता से मुक्ति के

उपाय शुरू कर देने चाहिए।

पर सावधान रहें, कोष्ठबद्धता से पीड़ित कुछ लोग कोष्ठ शुद्धि के लिए रेचक औषधियों का प्रयोग करते हैं और इन औषधियों के सेवन के फलस्वरूप कोष्ठबद्धता स्थाई हो जाती है। ये औषधियां बहुत बहुत हानिकारक होती हैं क्योंकि इन औषधियों के द्वारा जो विष हमारे पेट में पहुंचता है उससे हमारी पाचक ग्रंथियों को काफी रस निकालना पड़ता है और यह पाचक रस हमारे शरीर के लिये प्राणस्वरूप है। इस अमूल्य सम्पत्ति को अस्वाभाविक रूप से उत्तेजित करने से पाचक तंत्र क्रमशः कमजोर पड़ते जाते हैं, तदुपरांत हमें कोष्ठशुद्धि के लिये और अधिक शक्तिशाली रेचक दवाओं की आवश्यकता पड़ती है और अंत में ऐसी स्थिति हो जाती कि कभी जुलाब, कभी कैस्टर ऑयल तो कभी कोई मिनरल ऑयल लेना पड़ता है। इस बात के भी यथेष्ट प्रमाण मिले हैं कि मिनरल ऑयल शरीर के अंदर शोषित होकर लीवर तथा फेफड़ों को खराब कर डालते हैं।

किन्तु प्राकृतिक चिकित्सा में एक बूंद औषधि प्रयोग किये बिना भी हम अपने शरीर को विजातीय द्रव्यों से मुक्त रख सकते हैं जिसके लिये संयमित आहार विहार, शारीरिक परिश्रम, समुचित विश्राम, मानसिक तनावों से मुक्ति आदि उपाए अपनाये जा सकते हैं तथा अन्य उपायों में कटि स्नान, मिट्टी की पट्टी, पेट की ठण्डी व गर्म लपेट, मालिश, प्राणायाम, स्टीम बॉथ आदि प्रमुख हैं। उपरोक्त उपायों को अपनाने की वकालत गांधी जी ने भी की थी क्योंकि वे स्वयं काफी समय तक कब्जरोग (कोष्ठबद्धता) से पीड़ित रहे और उन्होंने भी इन प्रयोगों को अपने जीवन में उतारा तथा साथ ही उपवास व राम नाम अपनाने का भी शारीरिक शुद्धि में काफी लाभ बताया।

उपरोक्त उपायों को अपनाने से निश्चय ही हमारा शरीर विजातीय द्रव्य से स्थाई रूप से मुक्त हो

जाएगा और हम नाना प्रकार की बीमारियों से बचेंगे जिससे हमारा बहुमूल्य समय व पैसा डॉक्टरों से ईलाज कराने में व्यर्थ होने से बच जायेगा। अतः अब समय आ गया है कि हम नित्यप्रति के रोगों के निवारण हेतु प्राकृतिक चिकित्सा की शरण लें क्योंकि ऐलोपैथी में रोग के लक्षणों का शमन किया जाता है, आयुर्वेद व होम्योपैथी आदि में रोग के लक्षणों को ठीक किया जाता है किन्तु मात्र नेचुरोपैथी में ही रोग के लक्षणों का नहीं अपितु कारण का निवारण होता है जिससे रोग के लक्षण स्वतः ही गायब हो जाते हैं और मनुष्य स्वास्थ्य को प्राप्त कर दीर्घायु होता है। कोष्ठबद्धता के अन्य प्राथमिक उपचार सर्वप्रथम खुद की सेहत के प्रति सकारात्मक सोच, रात में सोते समय गर्म पानी के साथ एक चम्मच त्रिफला चूर्ण लें व दो खुबानी, दो अंजीर, दो मुनक्का व चार किशमिश 8 घंटे पानी में भिगोकर सुबह खाली पेट व शाम को खाली पेट सेवन करें। 15 दिनों के इस आसान प्रयोग से शरीर बलिष्ठ बनेगा व कोष्ठबद्धता में काफी आराम मिलने लगता है। शरीर को हमारे पेट से 80% इम्युनिटी मिलती है। यदि पेट सही है तो विजातीय द्रव्यों से मुक्ति संभव है। अन्यथा विजातीय द्रव्यों की तुलना उस कूड़े के ढेर से की जा सकती है। जिस पर सैकड़ों मक्खियां घूमती हैं। कीटाणुनाशक स्प्रे (औषधि सेवन) से कुछ समय के लिए उन मक्खियों को मारा तो जा सकता है परन्तु पुनः मक्खियों के आगमन को नहीं रोका जा सकता। मक्खियों रूपी बीमारियों को शरीर से स्थाई रूप से भगाने के लिए, अपने शरीर से कूड़े के ढेर (विजातीय द्रव्य) को निकालना ही पड़ेगा और ऐसी युक्ति करनी होगी कि आगे से शरीर में इनका संग्रह ही ना हो, उसके लिए वही मंत्र 80% क्षारीय भोजन व 20% अम्लीय भोजन।





भारत की ऐतिहासिक नगरी - अमृतसर



रंजू महाजन

भारत भूमि वह भूमि है जहां पर कण-कण में तैंतीस (33) करोड़ देवी देवता निवास करते हैं। यहां पर कई तरह के तीर्थ स्थान, पर्यटन स्थल और ऐतिहासिक नगर हैं। उनमें से एक पवित्र व पावन नगर अमृतसर है।

सन् 1927 में देश आजाद होने से पहले अमृतसर पंजाब का व्यापारिक शहर कहलाता था। विभाजन के बाद अमृतसर सीमांत शहर बन गया। इसकी पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से लगी होने के कारण यह शहर पर्यटन की दृष्टि से भी एक प्रमुख केन्द्र बन चुका है। पर्यटन क्षेत्र होने के कारण इसकी बहुत सी व्यावसायिक गतिविधियां भी हैं जिनका मुख्य स्रोत है— यहां के दर्शनीय स्थल। इन स्थलों को देखते ही मन प्रफुल्लित हो उठता है।

यहां पर तरह-तरह के त्यौहार मनाये जाते हैं, जिनमें दीवाली बहुत प्रमुख त्यौहार है। स्वर्ण मंदिर की शोभा तो देखते ही बनती है। कहा भी जाता है कि 'दाल रोटी घर की, दीवाली अमृतसर की।' संयोगवश मुझे भी अमृतसर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अमृतसर में जिन दर्शनीय स्थलों को देखने का सौभाग्य मिला, उनका संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है:—

हरमंदिर साहिब का गुरुद्वारा:

अमृतसर में कई ऐतिहासिक गुरुद्वारे हैं। परन्तु हरमंदिर साहिब का गुरुद्वारा सबसे प्रमुख है जो स्वर्ण मंदिर के नाम से विख्यात है। यह सोने से जड़ित है। इसमें लगे हुए झूमरों की शोभा देखते ही बनती है। खालसा पंथ की शुरुवात भी इसी मंदिर में हुई थी। धार्मिक आस्था का केन्द्र होने के कारण यहां पर हर रोज करीब एक लाख पर्यटक दर्शन करने आते हैं। इस मंदिर की कलात्मकता एवं भव्यता तो बस देखते ही बनती है। इस मंदिर का परिसर काफी विशाल है। यात्रियों की सुविधाओं के लिए सभी प्रकार की सेवाएं यहां मौजूद हैं।

दुर्ग्याणा मंदिर:

लोहगढ़ के पास देवी दुर्गा को समर्पित हिन्दुओं का प्रसिद्ध मंदिर है। यह लक्ष्मीनारायण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इसका निर्माण 20वीं सदी में किया गया। इसकी आधारशिला देश के प्रसिद्ध समाज सुधारक मदन मोहन मालवीय ने रखी थी। इस मंदिर में दुर्गा माता, सीता माता और हनुमान जी सहित कई देवी-देवताओं की मूर्तिया रखी गई हैं। राम मंदिर की

दीवार पर की गई जटिल नक्काशी और हिन्दू धर्म ग्रंथों का उत्कृष्ट संकलन इस मंदिर की खासियत है। नक्काशीयुक्त चांदी का दरवाजा होने के कारण इसे रजत मंदिर भी कहा जाता है।

वाघा बॉर्डर:—

भारत-पाकिस्तान सीमा रेखा पर स्थित होने के कारण इसे वाघा बॉर्डर कहा जाता है। 'बीटींग द रिट्रीट' नामक दृश्य को देखने के लिए सैलानियों का हुजूम उमड़ पड़ता है। यहां होने वाली परेड़ पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। पाकिस्तानी सीमा और भारतीय सीमा दोनों पर ही दर्शकों की भीड़ इसे देखने के लिए करीने से बैठा दी जाती है और पूरे अनुशासनबद्ध तरीके से यह कार्यक्रम संपन्न कराया जाता है।

श्री अकाल तख्त:

इसका शाब्दिक अर्थ है— शाश्वत सिंहासन। यह 'टैम्परल अथॉरिटी ऑफ खालसा' का सर्वोच्च तख्त है। सिखों के छठे गुरु हरगोबिंद जी द्वारा बनाया गया यह तख्त भारत के पांच तख्तों में सबसे पुराना और महत्वपूर्ण है। इसमें एक सोने के वर्क वाला गुंबद भी है। दिन के समय आदिग्रंथ को स्वर्ण मंदिर में रखा जाता है और रात के समय श्री अकाल तख्त के इस परिसर में रखा जाता है। यहां उन प्राचीन हथियारों को भी रखा गया है जिनका प्रयोग सिखों ने 1984 में स्वर्ण मंदिर पर हुए हमले के दौरान किया था।

गुरुद्वारा रामसर साहिब:

यह गुरुद्वारा अमृतसर के दक्षिण-पूर्वी छोर पर स्थित है। अन्य गुरुद्वारों की तरह यह गुरुद्वारा भी एक पवित्र रामसर सरोवर के किनारे बना हुआ है। यह तालाब यहां के 5 पवित्र तालाबों में से सबसे छोटा है। इसकी खुदाई पांचवे सिक्ख गुरु अर्जुन देव जी ने की थी। इसका नामकरण गुरु अर्जुन देव जी के पिता गुरु रामदास जी के नाम पर किया गया है। इस गुरुद्वारे में

संगमरमर की लाईनों वाला एक सभागृह है, जिसके ऊपर कमल के आकार में गुंबद बना हुआ है, जो कि अन्य दर्शनीय स्थलों में से एक है।

केसर बाग:

यह एक खूबसूरत बाग है जिसमें मुगलों के वास्तुशिल्प का मिश्रण देखने को मिलता है। इस चौकोर बाग के प्रवेश द्वार पर सीढ़ियां बनी हुई हैं जो कि एक पुल जैसी प्रतीत होती हैं। इस बाग में ढेरों छोटे-बड़े गुंबद बने हुए हैं, जिसका छायाचित्र प्रकृति को अपने कैमरे में कैद करने की इच्छा रखने वाले पर्यटक अपने साथ ले जाते हैं।

राम बाग:

यह अमृतसर का वह खूबसूरत बाग है, जहां महाराजा रणजीत सिंह गर्मियां बिताने आते थे। इस बाग को लाहौर के शालीमार बाग की तरह बनाया गया है। इसमें शंकुधारी पेड़, औषधीय पौधे और फव्वारे लगाए गये हैं। महाराजा रणजीत सिंह की घोड़े पर बैठे हुए बनी प्रतिमा भी पर्यटकों का मन मोह लेती है।

बेर बाबा बुढ़ड़ा:

स्वर्ण मंदिर में तीन पवित्र वृक्ष हैं। उन्ही में से एक वृक्ष बेर बाबा बुढ़ड़ा तथा लाची बेर और दुख भंजनी दो अन्य वृक्ष हैं। इस वृक्ष का नाम एक सिक्ख संत बाबा जी के नाम पर रखा गया है। ऐसा माना जाता है कि वह बाबा इसी पेड़ की छाया में बैठकर तालाब की खुदाई पर नजर रखते थे।

दुखभंजनी बेर वृक्ष:

जैसा कि नाम से ही पता लगता है कि दुख मिटाने वाला वृक्ष। पौराणिक कथा के अनुसार इसके बगल में स्थित कुण्ड में नहाने से बीबी रंजनी के पति का कुष्ठ रोग ठीक हो गया था। जब गुरु रामदास ने इस चमत्कार के बारे में सुना तो उन्होंने इस कुण्ड को नहाने वाले तालाब में बदल दिया।

कहा जाता है कि अगर इस वृक्ष के आस-पास के पानी में यह रोग ठीक करने का विशिष्ट गुण नहीं होता, तो शायद स्वर्ण मंदिर का अस्तित्व ही ना होता।

हनुमान मंदिर:

दुर्ग्याणा मंदिर के उत्तर- पश्चिमी छोर पर बना यह मंदिर हिन्दुओं का प्रमुख मंदिर है। कहा जाता है कि भगवान राम ने यहां पर अश्वमेध यज्ञ किया था। इस मंदिर में लगने वाला 'लंगूरवाला मेला' लंगूर नृत्य के नाम से जाना जाता है। भगवान हनुमान जी की बैठने की भव्य प्रतिमा भक्तों के मन को मोह लेती है। स्थानीय मान्यता के अनुसार प्रतिदिन इस मंदिर में दर्शन करने से सारी मनोकामनाओं पूर्ण हो जाती है।

श्रीराम तीर्थ मंदिर:

ऋषि बाल्मीकि का यह प्राचीन आश्रम है। यह मंदिर अमृतसर से 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार जब भगवान राम ने सीता को छोड़ दिया था। तब महर्षि बाल्मीकि ने उन्हें इस आश्रम में आश्रय दिया था। यहां पर स्थित झोंपड़ी में भगवान राम के बेटे लव और कुश का जन्म हुआ था। इस तालाब की खुदाई भी भगवान हनुमान ने की थी। बाल्मीकि की झोंपड़ी और सीढ़ी वाला कुआं जहां पर सीता माता नहाती थी, आज भी विद्यमान है।

गुरुद्वारा अटल:

यह स्वर्ण मंदिर के दक्षिणी छोर पर स्थित है। इसमें गुरु हरगोबिंद जी के पुत्र बाबा अटल राय की समाधि है। यह गुरुद्वारा बाबा अटल चौबीस घंटे लंगर बाँटने के कारण प्रसिद्ध है। यह उस पुरानी कहावत, 'बाबा अटल पकी-पकाईयां घल्ल' को सही ठहराता है। इसका अर्थ है- बाबा अटल पका-पकाया भोजन भेजते हैं। अपनी उत्कृष्ट वास्तुशिल्प के लिए यह गुरुद्वारा बहुत चर्चित है।

जलियांवाला बाग:

यह भी अमृतसर में एक मुख्य दर्शनीय स्थल है। 13 अप्रैल 1919 को जनरल डायर ने भारतीय क्रान्तिकारियों की शांत सभा पर गोलियां चलाई थी। जिसमें सैंकड़ों लोग शहीद हुए थे। इसमें एक कुआं है जो लाशों से भर गया था जिसे 'शहीदी कुआं' कहा जाता है। इस घटना ने स्वतन्त्रता आंदोलन को गति दी। इसलिए इसका ऐतिहासिक महत्व है। शहीदों की याद में यहां एक स्मारक भी बना हुआ है। यह स्थान भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

इसके अतिरिक्त अमृतसर और उसके आस-पास और भी बहुत सारे दर्शनीय स्थल हैं, जैसे इस्कॉन मंदिर और महाराजा रणजीत सिंह म्यूजियम भी बहुत सुंदर बना हुआ है, जिनकी शोभा देखते ही बनती है।

यहां पहुंचने के लिए बहुत सी यातायात की सुविधाएं उपलब्ध हैं, जैसे रेलमार्ग, सड़क मार्ग और वायु मार्ग। अपनी सुविधानुसार यहां आने के लिए किसी भी मार्ग का प्रयोग कर सकते हैं। कहा जाता है कि उस परम शक्ति, परम सत्ता और परमपिता परमात्मा की कृपा से ही हम किसी पवित्र स्थान के दर्शन कर सकते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि उनकी कृपा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। परन्तु अगर हम निर्मल भावना से दृढ़ संकल्प कर लें तो परमात्मा की कृपा ही जाती है।

अंत में मैं यही कहूंगी कि आप भी सपरिवार उस गुरु की नगरी के दर्शन अवश्य करें और अपने जीवन को धन्य और सार्थक करें।





भारत-चीन संबंध



कुमारी खुशबू

राजनीतिक दृष्टि से संबंधों की दुनिया भी बड़ी अनोखी हुआ करती है। एशिया के दो बड़े और अत्यंत प्राचीन सभ्यता-संस्कृति वाले विकासशील देश भारत और चीन अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता मात्र एक वर्ष के अंतराल से पुनः प्राप्त करने में सफल हो पाए थे। वर्तमान भारत का जन्म सन् 1947 और आधुनिक साम्यवादी चीन का जन्म सन 1948 में हुआ। दोनों को अपनी स्वतंत्रता के लिए लगभग समान स्थितियों में लंबा संघर्ष करना पड़ा। चीन जब जापान से जूझ रहा था, तब स्वयं पराधीन और ब्रिटिश सरकार से संघर्षरत होते हुए भी भारत ने चीन की हर प्रकार से सेवा सहायता की। इतिहास इस बात का गवाह है। फिर भी कुछ महत्वाकांक्षी राजनीतिक कारणों से एशिया के इन दो देशों में संबंध मधुर नहीं रह पाए। इसे न केवल इन दो देशों, बल्कि पूरे एशिया प्रायद्वीप और सारी शांतिप्रिय मानवता का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा।

चीन ने 1949 में आधुनिक रूप से उदय होने के बाद भारत व उसकी जनता के प्रति सद्भावना एवं मैत्रीपूर्ण भावना प्रदर्शित की तथा दोनों देशों ने परस्पर राजनीतिक संबंध स्थापित किये। दोनों देशों के महान नेता पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा चाकू एन लाई ने

एक दूसरे देश की यात्राएं कर परस्पर सार्वभौमिक स्वतंत्रता, सत्ता और सीमाओं को स्वीकार कर हर स्तर पर संबंधों को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया। दोनों देशों के राजनीतिक संबंधों के औपचारिक स्थापना के बाद पिछले 5 दशकों में भारत-चीन संबंध कई सोपानों से गुजरे। उनका विकास आम तौर पर सक्रिय व स्थिर रहा, लेकिन बीच में मीठी व कड़वी स्मृतियां भी रही।

1950 के दशक में चीन व भारत के संबंध इतिहास के सबसे अच्छे काल में थे। दोनों देशों के शीर्ष नेताओं ने तब एक दूसरे के यहां ही अनेक यात्राएं की साथ ही उनकी जनता के बीच भी खासी आवाजाही रही। लेकिन 1960 के दशक में चीन व भारत के संबंध अपने सबसे शीत काल में प्रवेश कर गए। इसके बावजूद दोनों के मैत्रीपूर्ण संबंध कई हजार वर्ष पुराने होने के कारण यह शीतकाल एक ऐतिहासिक लम्बी नदी में एक छोटी लहर की तरह ही था। 70 के दशक के मध्य तक वे शीतकाल से निकलकर फिर एक बार घनिष्ठ हुए। 1980 के दशक से 1990 तक के दशक के मध्य तक चीन व भारत के संबंधों में गर्माहट आ चुकी थी। हालांकि वर्ष 1998 में दोनों देशों के संबंधों में भारत द्वारा पांच मिसाइलें छोड़ने पर फिर एक बार ठंडापन

आया, परंतु तुरंत 1999 में भारतीय विदेशमंत्री की चीन यात्रा के बाद समाप्त हो गया। 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेयी ने चीन की यात्रा के दौरान चीनी प्रधानमंत्री के साथ भारत-चीन संबंधों के सिद्धांत और चतुर्मुखी सहयोग के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए। इसे द्विपक्षीय संबंधों के विकास का निर्देशन करने वाला मील के पथर की हैसियत वाला दस्तावेज भी माना गया।

विदेश नीति पर चीन व भारत बहुध्रुवीय दुनिया की स्थापना का समर्थन करते हैं और किसी एक शक्तिशाली देश के 'विश्व की पुलिस' बनने का विरोध करते हैं।

'पंचशील' समझौता चीन व भारत द्वारा दुनिया की शांति व सुरक्षा में किया गया एक महत्वपूर्ण योगदान है। देशों के संबंधों को लेकर स्थापित इन सिद्धांतों की मुख्य विषय वस्तु है: एक-दूसरे की प्रभुसत्ता व प्रादेशिक अखंडता का सम्मान किया जाए, एक-दूसरे पर आक्रमण न किया जाए, एक-दूसरे के अंदरूनी मामलों में दखल न दिया जाए तथा समानता व आपसी लाभ के आधार पर शांतिपूर्ण सहअस्तित्व बरकरार रखा जाए। ये सिद्धांत विश्व के अनेक देशों द्वारा स्वीकारे, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों व दस्तावेजों में दर्ज किए गए हैं।

एशिया में सबसे पहले स्वतंत्रता प्राप्त करने वाले देश भारत, म्यांमार व चीन को अन्य सभी देशों की प्रभुसत्ता व प्रादेशिक अखंडता का कायम रहना सबसे अधिक आवश्यक लगा और उन्हें विभिन्न देशों के संबंधों का निर्देशन करने के सिद्धांत की जरूरत पड़ी। इसलिए इन तीनों देशों ने मिलकर पंचशील का आह्वान किया। पंचशील आज भी एक शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था का आधार है। पंचशील के सिद्धांत महात्मा बुद्ध के काल से भारत और पूरे एशिया के आधारभूत आदर्श रहे हैं। इसके दौरान बड़े जोर-शोर से हिन्दी-चीनी भाई-भाई के नारे भी लगाए जाते रहे।

भारत सच्चे मन से इन नारों और पंचशील की नीतियों का पालन करता रहा, जबकि चीन का इन सबकी आड़ में और ही निहित स्वार्थ छिपा था। इसी की पूर्ति के लिए वह भीतर ही भीतर तब तक सक्रिय रहा जब तक भाईचारे की पवित्र भावना से प्रेरित होकर भारत ने अपना ही एक हिस्सा तिब्बत चीन को नहीं सौंप दिया।

चीन व भारत के बीच सबसे बड़ी समस्याएं सीमा विवाद और तिब्बत की ही रही हैं। चीन सरकार हमेशा से तिब्बत की समस्या को बड़ा महत्व देती आई है। वर्ष 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने चीन की यात्रा की और चीनी प्रधानमंत्री वन चा पाओ के साथ एक संयुक्त रूप से घोषणा पत्र जारी किया जिसमें भारत ने औपचारिक रूप से कहा कि भारत 'तिब्बत को चीन का एक भाग' मानता है। इस तरह भारत सरकार ने प्रथम बार खुले रूप से किसी औपचारिक दस्तावेज के माध्यम से तिब्बत की समस्या पर अपने रुख पर प्रकाश डाला, जिसे चीन सरकार की प्रशंसा प्राप्त हुई।

चीन वस्तुतः पंचशील और भाई-भाई के नारों की आड़ में तिब्बत तो लेना ही चाहता था, उसने उत्तर-पूर्वी सीमा पर मैकमोहन रेखा के इधर भी भारतीय भूमि पर अपनी नजरें गड़ा रखी थी। अतः जब उसे तिब्बत मिल गया और वहां के धार्मिक नेता दलाई लामा चीनियों के आतंक से पीड़ित होकर भारत आ गए, तो और भी चिढ़कर उसने भारत की उत्तर-पूर्वी सीमा प्रदेश के भीतर कभी झण्डे गाड़ने, कभी चौकियां बनाने और कभी गलत मानचित्र प्रकाशित करने जैसे विरोधी एवं शत्रुतापूर्ण कार्य आरम्भ कर दिए। पंचशील और भाईचारे के नाम पर भारत जब विरोध प्रकट करता तो उसे एक मानवीय भूल कहकर टाल दिया जाता। पर अंत में 1962 में चीन की भेड़िया-वृत्ति की पोल तब खुल गई जब उसने अचानक भारतीय सीमाओं पर आक्रमण कर हजारों वर्ग मीटर भारतीय प्रदेश पर अपना अधिकार जमा सभी समझौतों तथा संबंधों की धज्जियां उड़ा दी।

भारत व चीन के बीच सीमा समस्या लम्बे अरसे से अनसुलझी रही है। तब से लेकर आज तक भारत-चीन संबंध सुधर नहीं पाए, यद्यपि आज सीमाओं को छोड़ अन्य बातों से पहले सा तनाव नहीं रह गया है तथापि छोटी-छोटी बातों को लेकर अब भी उनमें तनाव उभरता रहता है। सीमा समस्या के समाधान के लिए चीन व भारत ने 1981 के दिसम्बर माह से अनेक चरणों में वार्ताएं की और उनमें से कुछ प्रगति पर भी है फिर भी सीमा संबंधी मामले पूर्णतया सुधरते हुए अभी दिखाई नहीं पड़ते।

भारत से दुश्मनी निभाने के लिए चीन ने पाकिस्तान से दोस्ती की पींगे बढ़ाई और आज भी बढ़ा रहा है। जिस कश्मीर को पहले वह भारत का भाग मानता था, आज पाकिस्तान के माध्यम से उस पर भी उसने नजरें गाड़ रखी हैं। दो बार भारत-पाक युद्ध के अवसरों पर भी उसने पाक का समर्थन किया है। भारत के अराजक और विभाजक तत्वों को भी वह तोड़-फोड़ का प्रशिक्षण देता रहता है। एशियाड के अवसर पर जब अरुणाचल प्रदेश के लोकनर्तक मैदान में आए, तब उनका बहिष्कार कर खेल में राजनीति घुसेड़ने का भद्दा

प्रयास भी चीन ने किया। राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर वह भारत के विरुद्ध पहले की तरह अब अपना रुख नहीं रखता।

भारत चीन संबंधों के सिद्धांत तथा चतुर्मुखी सहयोग ज्ञापन में दोनों देशों ने साहसिक नीतियों के तहत विशेष प्रतिनिधियों को नियुक्त करना, सीमा समस्या का राजनीतिक समाधान खोजना तथा विशेष प्रतिनिधि वार्ता स्थापित की।

चीन की विस्तारवादी नीतियों के कारण कभी संबंध पूरी तरह सुधर पाएंगे, कहा नहीं जा सकता। फिर भी राजनीति में असंभव कुछ भी नहीं होता। इस समय चीन व भारत अपने-अपने शांतिपूर्ण विकास में लगे हैं। 21वीं शताब्दी के चीन व भारत प्रतिद्वंदी हैं और मित्र भी। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में दोनों में व्यापक सहमति है। अब दोनों देशों के सामने आर्थिक विकास और जनता के जीवन स्तर को सुधारने का समान लक्ष्य है। आजकल लगातार कई तरह के प्रयत्न चल रहे हैं जिनसे भारत-चीन संबंध के संपूर्ण सुधार की भी आशा अवश्य की जा सकती है।



कार्यालयीन गतिविधियां



‘अंकुर’ पत्रिका के 105–107वें अंक का विमोचन करते हुए
श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार महोदय।



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की हिन्दी तिमाही प्रगति बैठक की
अध्यक्षता करते हुए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार महोदय।

कार्यालयीन गतिविधियां



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की हिन्दी तिमाही प्रगति बैठक के दौरान विचार-विमर्श करते हुए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार महोदय व अन्य सदस्य ।



‘अंकुर’ परिवार



जल ही जीवन है



हरबंस कौर औबराय

“सागर से उठा बादल बनके, बादल से गिरा जल होकर के। फिर नीर बना नदियां गहरी।”

इसलिए कहते हैं भारत नदियों का देश है। संसार में जल को बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है। पानी प्यास बुझाने के लिए ही नहीं है, पानी का हमारी दिनचर्या में भी बहुत महत्व है। जल हमें कई साधनों से प्राप्त होता है। जैसे झरनों, कुओं, नदियों, तालाबों, बावड़ियों, नलकूपों आदि से। हालांकि पृथ्वी का दो-तिहाई हिस्सा जल से घिरा हुआ है। लेकिन उस जल का मात्र 0.3: मानव के उपयोग में लाया जा सकता है।

भारत नदियों का देश है। गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी आदि नदियों का भारत में विशेष सम्मान होता है और पूजन भी किया जाता है। नदियों से हमारा आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन समृद्ध हुआ है। जिस प्रकार वनों का संबंध वृक्षों से है, उसी प्रकार नदियों का जल से संबंध है।

भारत में जो शहर नदियों के किनारे बसे हैं, वहां पर लोग नदियों में कचरा फेंक देते हैं, जिससे पानी दूषित होता है। मानव बस्तियों और उद्योगों का गंदा पानी सीधे नदियों में मिल जाता है जिससे पानी दूषित होकर हैजा, पीलिया और टाइफाइड आदि बीमारियां फैलती है। अगर हम पानी का ठीक ढंग से प्रयोग करें और पानी बेकार न बहायें तो हमें पानी के लिए तरसना नहीं पड़ेगा।

देश में जनसंख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और पानी हमें कम पड़ रहा है। पुराने तालाबों और बावड़ियों को मिट्टी से भर दिया गया है, जिसमें वर्षा का पानी जमा

होता था। लेकिन अब कालका और मोरनी हिल (हरियाणा) में कई स्थानों पर बावड़ियों को साफ किया गया है, ताकि वर्षा का पानी उनमें संग्रहीत किया जा सके।

दुनिया के विभिन्न देशों में पैदा होने वाले तनाव को टालने, प्रयावरण को विनाश से बचाने के लिए हमें जनसंख्या पर भी नियंत्रण करना होगा। जल का संरक्षण बहुत ही जरूरी है। संसार में जल और वायु के बिना जीवन असंभव है। ऐसा कहा जाता है कि जल की विकराल समस्या की वजह से तीसरा विश्वयुद्ध जल के श्रोतों पर कब्जा करने के लिए लड़ा जाएगा। जल का संरक्षण और संवर्धन करना चाहिए। बचत करनी चाहिए। वनों, पर्वतों और नदियों का बहुत ही नजदीकी रिश्ता है। वनों की रक्षा करो, पर्वतों पर घर न बनायें, नदियों का जल स्वच्छ रखें। प्रतिदिन 2 बाल्टी पानी बचाएं।

मैंने देखा है कि लोग पानी बहुत व्यर्थ बहाते हैं जिसे देखकर दुख होता है। कारों और गाड़ियों पर बाल्टी पानी भर-भर कर धोते हैं। (गाड़ियां साफ करने के लिए बाल्टी में पानी भरकर कपड़े से साफ करना चाहिए)। हमें प्रतिदिन कम से कम 10 गिलास पानी पीना चाहिए।

नगरों और गांव में नालियां साफ-सुथरी होनी चाहिए। नालियों में कूड़ा और गंदगी नहीं फेंकनी चाहिए। मच्छरों के पनपने हेतु पानी इकट्ठा न होने दें। घर की टंकियां 15 दिन बाद धो देनी चाहिए। पानी स्वच्छ होना चाहिए। पानी स्वच्छ पीने से मनुष्य कई बीमारियों से बच सकता है।





पहेलियां



तुष्टि गर्ग (बाल रचनाकार)

1. किसी चोर को जेल से भागना है। भागने के केवल तीन दरवाजे हैं। एक जिसमें जहरीली गैस है, दूसरे में मारने के लिए जाल बिछाए गए हैं जिससे बचना नामुमकिन है तथा तीसरे में शेर, बाघ और चीता है जो पिछले एक साल से भूखे हैं। वो किस दरवाजे से भागना चाहेगा?
2. सोचिए कि आप एक समुद्र के बीच में हैं और चारों ओर से शार्क से घिरे हुए हैं, तो आप कैसे बचेंगे?
3. आप एक बस के ड्राइवर हैं, बस में तीन यात्री चढ़े दो उतर गए। दस और चढ़े फिर बस पेड़ से टकरा गई। बताइये ड्राइवर की उम्र कितनी है?
4. एक आदमी रात को चोरी करके भागने वाला है तो उसके पास केवल तीन दरवाजे हैं। एक जिसमें हवा नहीं है जिससे वह सांस नहीं ले पाएगा, दूसरे में बंदूकें लगी है जो उसे देखते ही खत्म कर डालेगी और तीसरे में सूरज है जो उस द्वार में प्रवेश करते ही उस राख बना डालेगा। तो वह आदमी किस द्वार से भागेगा?
5. मैरीना नाम की एक औरत तैराकी करने समुद्र में जाती है। रेत गीली होती है उस पर पैरों के निशान नहीं होते हैं। वापस आने पर वह देखती उसका कीमती ब्रेसलेट खो गया है। पुलिस आती है और पुलिस को तीन लोगों पर शक होता है: टॉमी, रॉबेट व अलीना। रॉबेट कहता है कि वह रेत पर चल रहा था। अलीना कहती है कि वह मछली पकड़ रही थी और टॉमी कहता है कि वह गोते लगा रहा था। पुलिस हथकड़ी किसको डालेगी?
6. एक ऐसे पेड़ का नाम बताइये जिसका तना लकड़ी का न बना हो।
7. अगर लाल पत्थर हरे पानी में डालो तो क्या होगा?
8. दो लोग एक साथ चिमनी के अंदर घुसते हैं जब वो चिमनी से बाहर निकलते हैं तो एक का मुंह काला हो चुका होता है और दूसरे का मुंह साफ रहता है। तो बताइये मुंह पहले कौन धोएगा? — साफ वाला या काले वाला।

उत्तर

1. चोर तीसरा दरवाजा चुनेगा क्योंकि उसमें बाघ, शेर और चीता जो एक साल तक भूखे होने के कारण भूख से मर जाएंगे या एक दूसरे को मारकर खा लेंगे।
2. आप सोच से बाहर आ जाएं।
3. जितनी आपकी उम्र है उतनी ही ड्राइवर की उम्र है क्योंकि बस के ड्राइवर आप ही हैं।
4. वह आदमी तीसरे द्वार से जाएगा क्योंकि सूर्य तो रात को ढल जाता है।
5. पुलिस रॉबेट को हथकड़ी डालेगी क्योंकि उसने कहा मैं रेत पर चल रहा था जबकि रेत पर पैरों का कोई निशान नहीं था।
6. केले का पेड़।
7. पत्थर गीला हो जाएगा।
8. क. साफ मुंह वाला पहले मुंह धोएगा क्योंकि वह काले मुंह वाले को देखकर सोचेगा कि उसका भी मुंह काला है।
ख. ऐसा कभी नहीं हो सकता है कि चिमनी में घुसकर एक का मुंह काला हो जाए और दूसरे का ना हो।
ग. एक चिमनी में दो व्यक्ति कभी एक साथ घुस ही नहीं सकते हैं।

A full-page background image showing a vast, golden field of tall grass or wheat, slightly blurred, suggesting a breeze. On the right side, a large tree with dense, yellowish-green foliage stands against a bright, hazy sky. The overall color palette is warm, dominated by yellows and oranges.

कविता

गजल

1

सुना है इस शहर में
अदालतें बहुत हैं ।
पर नजरोँ से कत्ल करने वालों का
हमने सरे—आम देखा है ॥
अक्सर होता है कत्ल में
खंजर का इस्तेमाल ।
पर उनकी नजरोँ से
हमने कत्ल—ए—आम देखा है ॥
मरते हैं दुनिया में लोग
अक्सर एक बार ।
पर ये सिलसिला तो
हमने बार—बार देखा है ॥
इस जिस्म को छलनी किया
जिस शख्स ने बार—बार ।
मेरी हर उम्मीद ने
उनमें ऐतबार देखा है ॥
बेशक सांसे नहीं रही
अब इस सीने में ।
एक लंबे अरसे तक हमने
उनका इंतजार देखा है ॥



2

रिंकू कश्यप

कभी—कभी सोचता हूँ
ये जिंदगी एक तलाश है यारों ।
वो मुझ से दूर ही सही
पर दिल के हमेशा पास है यारों ॥
लहरों को अक्सर
मिलते देखा है साहिल से ।
कुछ और नहीं वो
सागर के गमों का एहसास है यारों ॥
सर्द रातें बिताई हों
जिस भंवरे ने फूल की पनाह में ।
सुबह उसकी लाश में भी
प्यार के जज्बात हैं यारों ॥
रोता रहा है अक्सर
आसमां भी धरती के लिए ।
बारिश नहीं वो
प्यासे प्यार की फुहार है यारों ॥



इस जिस्म का पंछी
पिंजरे से उड़ गया ।
उसके वापिस आने की
बाकी अभी आस है यारों ॥
कभी—कभी सोचता हूँ
ये जिंदगी एक तलाश है यारों ॥



अकेला हुआ इन्सान

महेन्द्र सिंह

अकेला हुआ इन्सान, अकेला हुआ इन्सान ।
 भीड़ भरी दुनिया में, खुद में खोया इन्सान ।
 तृष्णा के पीछे भागे, नहीं दिखाई देता आगे ।
 पाप—कर्म में लिप्त रहे, जीने की दुआ मांगे ।
 आलस्य से है प्यार बहुत, मेहनत से डरता भागे ।
 भगवान का सहारा ताके, सोचे सोया भाग जागे ।
 सदकर्म बिन दुनिया में, मिलती नहीं पहचान ।
 अकेला हुआ इन्सान, अकेला हुआ इन्सान ।
 भीड़ भरी दुनिया में, खुद में खोया इन्सान ।

दूसरों की खुशी में ही, खुशी है मिलती ।
 एकता में है बल, ये सच्चाई नहीं छुपती ।
 दूसरों का चाहे बुरा, नाव उसी की है डूबती ।
 क्यों भूल गए हम, ऐसे ही मिटती हस्ती ।
 परमार्थ करके अकड़ते हैं, जैसे किया अहसान ।
 अकेला हुआ इन्सान, अकेला हुआ इन्सान ।

भीड़ भरी दुनिया में, खुद में खोया इन्सान ।
 इंटरनेट आया देखो, कर दिया अजब कमाल ।
 सिकुड़कर हुई दुनियां, जैसे साड़ी हुई रुमाल ।
 रस्म—रिवाज मोबाइल निभाये, इकट्ठे नहीं होते ननिहाल ।
 संदेश भेजकर काम चलाते, चाहे गुजरे सालों—साल ।
 मैदानी खेल दुर्लभ हुए, फेसबुक, व्हाट्सप में डूबा जहान ।
 अकेला हुआ इन्सान, अकेला हुआ इन्सान ।
 भीड़ भरी दुनिया में, खुद में खोया इन्सान ।

भीड़ में भी रहे अकेला, इससे बुरा भी क्या होगा ।
 नदी में भी रहे प्यासा, इससे दुखद भी क्या होगा ।
 रिश्ते—नाते सब टूट रहे, अपना—पराया भी क्या होगा ।
 इन्सानियत जो जिंदा रखे, उससे खरा भी क्या होगा ।
 सुख—दुख में अपने हों साथ, है वही असली धनवान ।
 अकेला हुआ इन्सान, अकेला हुआ इन्सान ।
 भीड़ भरी दुनिया में, खुद में खोया इन्सान ।

वक्त तो लगता है



एकता धानिया

माना कि अभी पतझड़ है,
पत्ते कुछ कम हैं शाखों पे
नए पत्ते आने में कुछ वक्त तो लगता है।

रूठ गये जो अपने थे
मिल जाए शायद किसी मोड़ पर
पर रूठों को मनाने में कुछ वक्त तो लगता है।

दिल में जख्म दिये कुछ यादों ने,
मुमकिन है कि भुला पाएं हम।
पर दिल के जख्म भुलाने में कुछ वक्त तो लगता है।

नादां है ये दिल,
ठोकर खाई हैं इसने बहुत
पर ठोकर खाकर सम्भलने में कुछ वक्त तो लगता है।

दरमियां फासले खड़े किये,
तुमने या हमने।
उन फासलों को मिटाने में कुछ वक्त तो लगता है।

अब हर शख्स अन्जान है
मेरे लिए।
नये चेहरों को अपनाने में कुछ—वक्त तो लगता है।

कार्यालयीन गतिविधियां

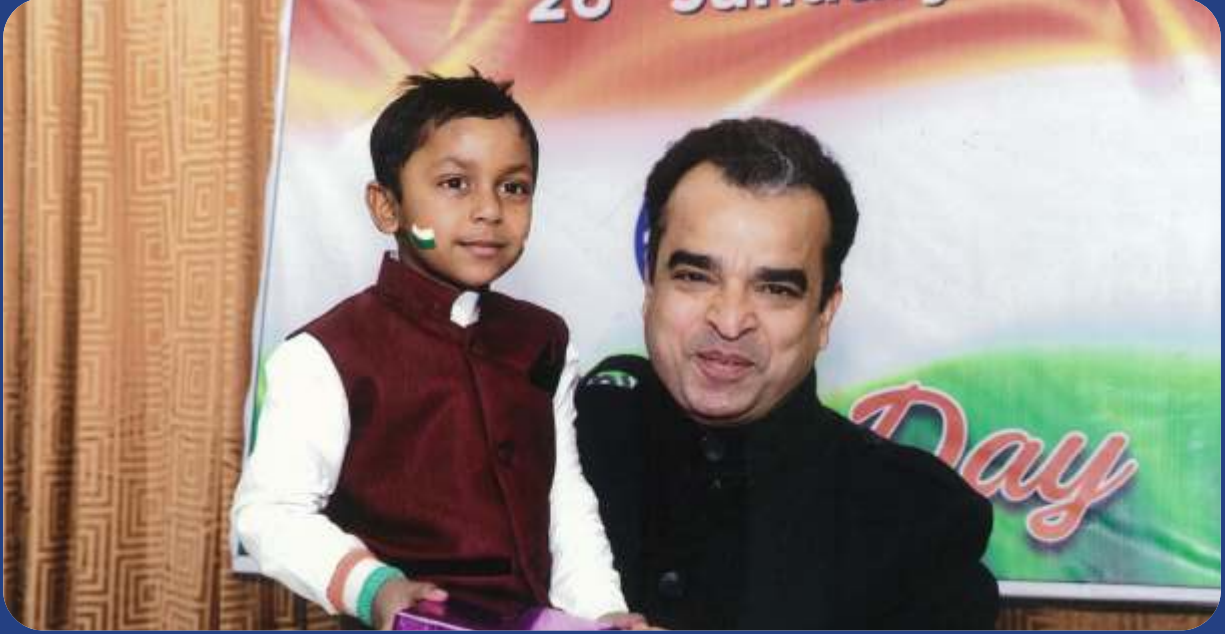


गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण के लिए जाते
श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार।



ध्वजारोहण पश्चात राष्ट्रगान की मुद्रा में महालेखाकार महोदय एवं
कार्यालय के कलाकार साथी।

कार्यालयीन गतिविधियां



गणतंत्र दिवस के अवसर पर एक बाल कलाकार को प्रोत्साहन हेतु गोद में उठाए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार।



गणतंत्र दिवस समारोह पर बाल कलाकारों के साथ महालेखाकार महोदय, श्री फ़ैसल इमाम।

भिखारी की व्यथा



अनूप डांगरा

गरीबी बेहाली में ऐसा डूबा,
एक—दम बेमोल सा हो गया हूँ।
घर परिवार तो कब का भूला,
अब तो अपना नाम तक भूल गया हूँ।।

एक—एक दिन सौ साल सा लगता है,
आने वाला हर पल काल सा लगता है।
भगवान ने जानवर ही क्यों नहीं बनाया मुझे,
खुद को इन्सान कहने में डर सा लगता है।
इन्सानों के तरीके और हिसाब भूल गया हूँ,
अब तो अपना नाम भूल गया हूँ।

भूख लगती भी है और नहीं भी,
दिमाग चलता तो है, यूँ ही कहीं भी।
समय काट—काट कर अब थकन होने लगी है,
देखो किस्मत मेरी अब तो सोने लगी है।

अपने ही शरीर के काम भूल गया हूँ,
अब तो अपना नाम भूल गया हूँ।
आंधी, बारिश, गर्मी, सर्दी, सब अपने हैं,
कभी रातों को बेचैन नींद कभी दिन में भी सपने हैं।

इस हालात में कैसे पहुँचा इसका अब ध्यान नहीं,
कौन साथ आए, कौन छूट गए, कुछ भी तो याद नहीं।
लोगों के चेहरे और रिश्तेदार भूल गया हूँ,
अब तो अपना नाम भूल गया हूँ।

एक घूंट पानी ही गंगा है, रोटी ही राम,
ये फुटपाथ ही काशी है, यही हरी धाम।
यही अमरनाथ है, तिरुपति है, यही ऋषिकेश,
यही ब्रह्मा है, यही विष्णु और यही महेश।
अरे कौनसे तीर्थ, कौनसे भगवान भूल गया हूँ,
अब तो अपना नाम भी भूल गया हूँ।



ऋतुओं की कहानी उनकी जुबानी



सुनील कुमार गुप्ता

मैं ऋतु — नाम शीत है मेरा, मुझको खुद पर मान।
मेरे आने से खिल उठती चेहरों पर मुस्कान॥
शीतलता पहुंचाती हूं, सब की भूख बढ़ाती हूं।
रोग निकट न आने देती, मैं तंदुरुस्ती का वरदान॥

मैं ऋतु — नाम ग्रीष्म है मेरा मुझको भी है मान।
मुझको भी मिलता धरती पर उतना ही सम्मान॥
मेरे आने से फल पकते होती फसल तैयार।
मेरे आने से होता है जीवन में संचार॥

मैं ऋतु— नाम है वर्षा मेरा मैं हूं सबकी जान।
मैं सावन भादो में आती, धरती की तब प्यास बुझाती॥
मुझसे हुआ विलंब अगर तो होती हानि।
भूखे प्यासे मर जाते है धरती पर तब प्राणी॥

मैं ऋतु— नाम है पतझड़ मेरा मैं भी करती मान।
वनस्पति के लिये मैं साबित होती हूं वरदान॥
मैं जब आती झर जाते हैं पत्ते सब निष्प्राण।
नयी कोपलों को मिल जाता जीवन का सौपान॥

मैं ऋतु—नाम बसंत है मेरा, मेरी भी है शान।
सब ऋतुओं से अलग है मेरी धरती पर पहचान॥
मेरे कदमों की आहट पर खिलते फूल महकते बाग।
कोयल गा गा गीत सुनाती— मैं ऋतुओं की सरताज॥

पर इन्सान की दखल—अंदाजी करने लगी खराब।
इसीलिए तो धरती पर अब होने लगा विनाश॥
संभलों मानव कुदरत से अब करो न यूं खिलवाड़।
ऐसा न हो दखलअंदाजी बन जाय अभिशाप॥





अरनव
(बाल रचनाकार)

गर्मी

गर्मी आई गर्मी आई
मोटे कपड़े फेंक रजाई
आम रसीला संग है लाई
गर्मी आई गर्मी आई

गर्मी में सब जलते रहते,
ठण्डी हवा सभी को भायी
गर्मी आई गर्मी आई

कुल्फी, आईसक्रीम और ठंडाई,
ठण्डी चीजें सबको भायी
गर्मी आई गर्मी आई

गर्मी में सब घर में छुपते,
ए.सी., कूलर खूब चलाते
गर्मी आई गर्मी आई

आओ फिर से सैर करें हम,
सेहत को थोड़ा चमकाएं
गर्मी आई गर्मी आई

नानी—दादी पास बुलाए
छुट्टी में पिकनिक को जाएं
गर्मी आई गर्मी आई

ढेरों छुट्टी ढेरों मस्ती
गर्मी अपने संग है लाई
गर्मी आई गर्मी आई ।



इन्सान

अ इन्सान तू डरना मत
चाहे आंधी आ जाए, चाहे चट्टान सरक जाए
चाहे ज्वालामुखी भड़क जाए
चाहे मंजिल पर पहुंचने वाली सड़क न मिल जाए।



तू डरना मत, तू आगे बढ़
डरता क्यों है, चुनौती से लड़
ये प्रकृति है जो तेरी आकृति है
शक्ल पर तेरे लिखा है जांबाज
फिर हारा सा क्यों लगता है आज?

ये तेरी मजबूरी है या कोई भय
नौकर नहीं कर पाता खुद की मंजिल तय
तू शेर है, शायद तू भूल गया
तू वही पहलवान है जो स्कूल गया

शिक्षा तो ले ली तूने ज्ञान अर्जित करके बन गया विद्वान
पर तू क्या नहीं जानता कि तुझे बनना है एक बहादुर इन्सान
मुरझाते हुए फूल को देखकर क्यों अपने समान मान लेता?
तू तो कमल है जो कीचड़ में भी खिल जाता, यह क्यों नहीं जान लेता?

कांच पर पत्थर मारने से कांच टूट जाता है
लेकिन पत्थर पर कांच मारने से पत्थर नहीं

तू पत्थर है पर कठोर नहीं
तू बलवान है पर चोर नहीं

तू कोमल है अनमोल है, पहचान ले तेरा क्या मोल है?

चलता रह तू मंजिल पर पहुंच जाएगा,
अरे! रुकने से तो तू सुस्त बन जाएगा
छल-कपट-माया बाधक बन कर आएंगे
तेरे एक गंभीर इशारे से डरकर भाग जाएंगे
बस कमजोरी तेरी कुछ न हो, तेरे बोल शब्द तुच्छ न हो।

धीर बने गंभीर बने, चाहता है ये जहां

नाज करें तुझ पर सब
कुछ कर ऐसा अ इन्सान।



सुश्री संपदा नारायणी
(बाल रचनाकार)





शिवांश कश्यप
(बाल रचनाकार)

राष्ट्रभाषा हिन्दी

मेरी भाषा मेरा अभिमान,
इसमें है जन-जन की जान ।
आओ करें इसका सम्मान,
ये है भारत देश की शान ॥

ये सब भाषाओं की सहेली है,
उन सबसे अनोखी अकेली है ।
एकता के सूत्र में बांधती है,
भरी सभा में सम्मान दिलाती है ॥

आओ करें इसका गुणगान,
ये है भारत देश की शान ।
ये भाषाओं की माला का मूंगा है,
इसके बिना तो राष्ट्र गूंगा है ।

देश को उन्नति की ओर ले जाती है,
भारत माता को ताज पहनाती है ॥
हर भारतवासी के इसमें है प्राण,
ये है भारत देश की शान ।

आओ मिलकर प्रण करें,
हिन्दी का प्रयोग अधिक करेंगे ।
नई पीढ़ी के भविष्य और सपने,
हिन्दी भाषा से ही बुनेंगे ॥

तभी बनेगा भारतवर्ष महान,
हिन्दी है भारत देश की शान ।

हमारी नागरी लिपी दुनिया
की सबसे वैज्ञानिक लिपी है ।

राहुल सांकृत्यायन

अंकुर



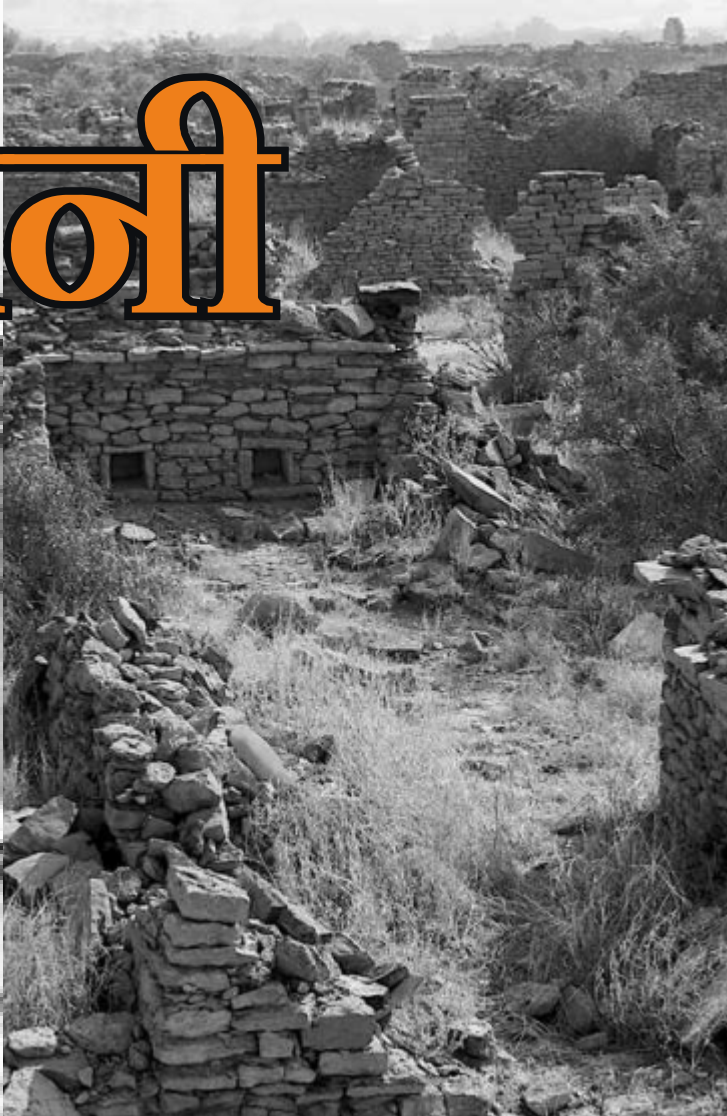
काजल कुमारी

फूट रहा है मन में
नये परिवर्तन का अंकुर
याद आ रहा है मुझे
वो बीते दिनों का अंकुर
खिलने को बेचैन अपनी शाख पे
कुछ खिली-खिली सी
नई-नई रचनाएं, नई-नई कहानियां
नई कविताओं के साथ
हर बार मन को मोहती मुस्काती है
जाने कितने ही रंग और दिखाएगी
हर कली को फूल बना कर
अंकुर खुद ही खिल जाएगी।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है: कमलापति त्रिपाठी



कहानी





अम्मा क्यों रोती है



जसविंदर शर्मा

मैं अम्मा को अपने पास ले आई थी।

मेरे भाई कपिल ने बहुत विरोध किया था। मैं समझाना चाहती थी कि अब अम्मा 70 के पार है। उसे केयर की जरूरत है। मैं अपने घर में रखकर उसकी अच्छी केयर कर सकती हूँ।

हर रोज शाम को ऑफिस से घर जाते हुए मैं अम्मा के घर से होकर जाती थी। अब मुझे कुछ दिनों से लगता था कि अम्मा उदास रहने लगी है। मैंने अपने पति से बात की। अम्मा को मेरे घर लाने के लिए उसे मना लिया। मेरे पति ने मुझसे बस इतना ही कहा, "तुम्हारे भाई को एतराज हो सकता है। वह सोचेगा कि हम अम्मा को अपने पास क्यों रखना चाहते हैं। कल अम्मा तुझे ही सब कुछ न दे जाए।"

मेरा भाई कपिल मुझसे पांच साल छोटा है। फौज में सीनियर अफसर है। शुरू से ही जिद करने में उस्ताद है। सब उसके सामने हथियार डाल देते हैं। उसकी पत्नी कविता भाभी से कभी किसी ने कोई शिकायत नहीं की। कोई करे भी तो कैसे। वह तो मेहमानों की तरह आती है। फासले से रहकर नपी तुली बात करती है। अपने घर भी मेहमानों की तरह ही बुलाती है।

सेक्टर 23 में अम्मा की आठ मरले की कोठी है। मैंने भी अम्मा के पड़ोस में ही घर बनाया था मगर फिर यहां सेक्टर 37 में मुझे एक कनाल का घर मिल गया।

जब तक मैं अम्मा के सेक्टर में थी मुझे अम्मा ने बहुत सहारा दिया। मेरे बेटे को पालने में बहुत मदद की।

मेरी सास तो मेरे साथ अफसरों जैसा व्यवहार करती थी। वह ज्यादातर मेरे पास रहती। यहां उसे खाने-पीने की मौज थी। यहां वह पूरा दिन आराम से टी.वी. देखती रहती। मेरे ससुर के गुजर जाने के बाद अब वह मेरी ननदों के पास रहकर ज्यादा खुश रहती थी।

अम्मा भी मेरे घर में आने को कब से तैयार थी। कहती, "बेटी के घर अगर मैं मर गई तो अगले जन्म में छिपकली बन कर दुबारा जन्म लूंगी। अपने ठिकाने पर ठीक हूँ। तू मेरा इतना ख्याल रखती है। कभी-कभी कपिल भी आता है।"

मैं बहस करती, अब पहले जैसी बात नहीं रह गई है। पहले मैं आपके पड़ोस में ही थी। एक फोन कॉल पर दौड़कर आ जाती थी। अब आपकी उम्र ज्यादा हो रही है। कई तरह के रोग हैं। कभी मनोचिकित्सक के पास तो कभी डेंटल वाले के यहां। मुझे बहुत भागना पड़ता है। सड़कों पर रश बढ़ता जा रहा है। मेरा पति तो आपको पता है चाय का कप तक नहीं बना पाता। मैंने ही उसे कुछ ज्यादा पैम्पर कर रखा है। हर चीज प्रेस करके सजा देती हूँ। खाने के टेबुल पर बैठकर वह न जाने कितनी परेड करवाता है मुझसे। जैसे बच्चों को स्पून फीडिंग करवाते हैं न। आप

सही कहती हैं कि बस फिंगर बाऊल की कमी रह जाती है। ऐसे में मैं आपके पास ज्यादा समय के लिए नहीं रुक सकती। अब हमने फैसला कर ही लिया है कि अपनी कोठी के दूसरे फ्लोर पर आपके लिए दो कमरे और किचन डाल देंगे। तीन महीने बाद आप अपनी कोठी किराये पर उठाकर मेरे पास ही शिफ्ट हो जाना।

कोठी में काम शुरू करवा तो दिया था मगर मेरे मन में आशंका थी कि अम्मा कहां हमारे पास आ कर रहेगी। बेटे से बहुत डरती है वह। उसे नाराज नहीं करना चाहती। सोचती है कि एक बार अनबोल हो गया तो फिर सारी उम्र का बिछोड़ा और कसैलापन रहेगा। मन को समझा लेती है कि आसपास कौन सा लड़के अपने मां बाप के पास टिकते हैं। अब तो विदेश जाने का अनोखा रिवाज चल निकला है। चलो उनका बेटा तो फिर अपने देश में ही है।

अपनी बहू को लेकर अम्मा की नीति मेरी समझ में नहीं आई। मेरी सास तो मुझे एक की दस सुनाती है और महीने में दस दिन तो हम एक दूसरे से बोलती नहीं। मेरा पति तो पहले दिन से ही मस्त मलंग रहा। कभी अपनी मां को टोकने की हिम्मत नहीं कर सका। तब तो मेरा ससुर भी जिन्दा था। मगर अब तो कुछेक सालों से मेरी सास का रौब मुझ पर कुछ ज्यादा ही बढ़ने लगा था।

एक दिन तो मेरी सास ने अजीब तमाशा खड़ा कर दिया। मैं ऑफिस से शाम को थकी हुई पांच मिनट के लिए अम्मा के घर से होती हुई घर पहुंची तो मेरे घर में पहले से ही एक कार पार्क हो रखी थी। खैर, बाहर कार खड़ी करके मैं अंदर पहुंची तो मैंने देखा कि मेरा पति, उसकी बड़ी बहन, जीजा और अम्मा गहन सोच में डूबे बैठे थे।

मैं चाय बनाने किचन में गई। सब ने चाय उठाई और मेरी तरफ सवालिया नजरों से जीजा ने कहा, 'डिम्पी, तुम तो पढ़ीलिखी समझदार हो।'

मैंने कहा, 'अब मैंने क्या कर दिया?' मेरा पति तो घुग्गु बनकर ऐसे बैठा था मानो नर्सरी का छात्र हो। इस बार मेरी सास ने आवाज बुलंद की, 'फालतू की कोई बात नहीं। बस मेरे लिए गर्म फुलके का बंदोबस्त करवा दिया जाए।'

मैं चुप रही इन गंवार लोगों को हराने का एक ही तरीका मैंने कारगर पाया था। कोई स्पष्टीकरण मत दो। मेरी सास हट्टी-कट्टी है। अपने लिए दो फुलके नहीं बना सकती दिन में। मेरा पति कैसा मासूम बनकर बैठा है। हरामी को अपनी पत्नी की तरफदारी तो दूर अपनी मां को समझाना नहीं आता कि वह ठण्डे दूध को इतना फूंक क्यों रही है। कितना मरती खपती हूं मैं इस घर के लिए। और मेरी सास सांड की तरह इधर से उधर मटकती है। मैं सब के लिए खाना बनाकर दफ्तर जाती हूं। मेरे लिए कोई कुछ नहीं करता। ये सब कोई न कोई बतंगड़ बनाते रहते हैं। ये सब जलते हैं मुझसे। मैंने शहर में इतनी बड़ी कोठी बना ली। मेरा बेटा आई आई टी में है। मेरे पास दो बड़ी कारें हैं। घर में हर चीज है। सब का जलन के मारे बुरा हाल है।

मैं चाय के बर्तन उठाकर किचन में आ गई और रात के खाने के लिए सब्जी काटने लगी। इन लोगों को बहुत निराशा हुई। वे सोचते थे कि हंगामा होगा। पति पत्नी आपस में लड़ेंगे मरेंगे। कुछ न होता देख वे वहां से जाने के लिए उठे। मैंने अपनी ननद से बस इतना कहा— खाना खाकर जाना।

अम्मा अपनी बहू से बहुत बचती थी। एकाध बार ही गई उसके पास रहने के लिए दिल्ली में। वहां का कोलाहल अम्मा से सहन नहीं होता। एक ही हफ्ते में लौट आई। चण्डीगढ़ में रहने वालों को कोई दूसरा शहर पसन्द कहां आता है। सविता भाभी भी अम्मा को लेकर कुछ ज्यादा चूं-चपड़ नहीं करती। एक अजीब सा नीरस नाता है दोनों में। अपने बेटे से अम्मा हजारों शिकायतें करती हैं मगर बहू के सामने मजाल है कोई बात उठती हो। बेटा ही बहू का रोल बखूबी निभा देता

है। जब भी आता है अम्मां और उसमें तीखी बहसें चलती रहती हैं।

अब ये बहसें पैसे से संबंधित रहती हैं। भाई ने दिल्ली डीडीए में बड़ा सा फ्लैट बुक करवाया तो अम्मां से बीस लाख की मांग कर बैठा। अम्मां कहती थी कि उसके पास तो दस लाख ही हैं। वह बहसने लगा कि पापा की पेंशन भी अम्मां लेती है। अपने रिटायरमेंट का पैसा भी उसी के पास है। अम्मां ने हिसाब समझाया मगर उसके शक की सूई मेरे पर ज्यादा घूमी कि मैंने अम्मां से पैसे लिए होंगे। खैर, मैं तो किसी पिक्चर में थी ही नहीं, सो मुझे किस बात का डर था।

वैसा ही सेट किया। अम्मां यहां आकर कुछ ही दिनों में सहज हो गई। अपना घर उसने किराए पर उठा दिया।

पहली बार मेरा भाई यहां अम्मां से मिलने आया तो उसका व्यवहार रूखा-रूखा सा था। दो दिन में वह नार्मल हो गया। उसे लगने लगा कि मैं अम्मां को कितने केयर से रख रही हूं। वह अम्मां से बोला, 'अम्मा, तुमने डिम्पी की सेवा भी तो की है जब उसका बेटा पैदा हुआ था'। अम्मां ने उसकी हां में हां मिलाई।

मेरे बेटे की शादी पर खूब नाची अम्मां। कई दिनों तक थकावट नहीं उतरी उसकी। बेटे को यू एस ए में एप्पल में शानदार नौकरी मिल गई। बहू भी वह



अब अम्मा को अपने पास लाकर रखने के लिए मैं राजी कर रही थी। मेरी कोठी के उपर का फ्लोर तैयार हो चुका था। अम्मां अंदर से तैयार तो थी मगर अपने बेटे से बात करने में घबरा रही थी।

अम्मां 31 दिसम्बर को हमारे घर शिफ्ट हो गई। हमने यह ख्याल रखा कि उसे कुछ भी अनजाना ना लगे। उसके घर में जैसा गेटअप था, यहां सब कुछ

साथ ले गया मेरे लाईफ की वही रूटीन रही। घर से दफ्तर और दफ्तर से घर। घर आते ही सब से पहले मैं उपर अम्मा से मिलने जाती। उसके साथ बैठकर चाय पीती।

अम्मां कोई न कोई कड़वी बात छेड़ देती, 'कपिल का फोन आया था। कह रहा था कि अपनी कोठी की पॉवर ऑफ अटॉर्नी मैं उसके नाम कर दूं।'

मैंने कहा, 'तो कर दो न, क्या समस्या है? मुझे कुछ नहीं चाहिए।' अपने मन की उलझन वह खुद बताती, 'मेरा तो फर्ज बनता है कि दोनों बच्चों के साथ बराबर इन्साफ करूं।

इसके बाद मैं म्यूट हो जाती। मैंने हर चीज अपने दम पर हासिल की है। अम्मा कहां कहां की बातें करती।

मेरे बेटे ने बुलाया तो हम दोनों मियां-बीवी महीने के लिए यू एस ए चले गए। अम्मा का ख्याल रखने के लिए मैं अपनी कुछ सहेलियों की ड्यूटी लगा गई। मेरा भाई भी कहने लगा कि आखिरी हफ्ते में वह अम्मा को दिल्ली ले जाएगा।

यू.एस.ए. से अम्मा से सुबह-शाम व्हाट्सएप पर बात हो जाती थी। अब अम्मा बात-बात पर रोने लगती। मैंने सोचा कि अब बढ़ती उम्र में आशक्त होने और अकेलेपन के डर के मारे अम्मा के आंसू छलक आते हैं। हमारे दूर के आखिरी हफ्ते में मेरा भाई अम्मा को ले जाने के बजाय खुद ही उसके पास आ गया। शायद भाभी ने अम्मा को न लाने के लिए कहा हो।

उसी दौरान मेरे भाई ने अम्मा की कोठी की 'पावर ऑफ अटॉर्नी' अपने नाम बनवा ली। मुझे तो खैर यह बात सुनकर जरा भी बुरा नहीं लगा। मैं तो चाहती थी कि मेरा एक ही भाई है, कोठी के कारण हममें कोई गलतफहमी न रहे।

अम्मा की अच्छी खासी इन्कम थी। अपनी पेंशन के साथ पापा की पेंशन भी उसे मिलती थी। कोठी से भी बीस हजार महीने में किराया आ जाता था। अम्मा का खर्च था भी क्या? डाक्टर के पास मैं ले जाती थी। खाना-पीना भी सिम्पल था।

अब कई बार लगता है कि मेरा भाई कितना जलता है मुझसे। मेरी कोठी और मेरे बेटे की नौकरी की बातें तो पुरानी हो गई। उसे जलन है कि मैं अम्मा से कितना प्यार करती हूं। अम्मा तो फिर भी बहुत बार

धौंस मारती है कि उसने मेरे बेटे को पालने में मेरी बहुत मदद की है और मैं यह सब चुपचाप सहन कर लेती हूं।

अम्मा को अब डिमेंशिया की प्रॉब्लम के लिए मनोचिकित्सक के पास पन्द्रह दिन बाद लेकर जाना पड़ता है। अब उसके शरीर का एक हिस्सा सुन्न भी हो जाता है। पाइल्स की समस्या है। भूख नहीं लगती। पूजा पाठ का समय बढ़ता जा रहा है। अम्मा छमछम रोती है। पता नहीं क्यों? कोई समस्या नहीं। बेटे को लेकर वह निर्मम हो गई। फिर किस चीज का दुख है उसे।

मैंने कई लोगों से इस बारे में बात की है। दिमाग के डॉक्टर से भी मैं हर बार पूछती हूं कि कोई ऐसी दवा दो कि अम्मा इतना ज्यादा न रोए। उसके आंसू देखे नहीं जाते मुझसे। इस बात को लेकर बहुत बार झगड़ा भी हो जाता है हमारा। अम्मा कहती है, 'डिम्पी बेटे, ये खुशी के आंसू हैं तेरे प्रति अहसान के मोती हैं। तू न होती तो मैं रुल जाती।' मैं जिरह करती, 'औलाद का मां बाप के लिए किया गया काम कोई एहसान होता है क्या? अम्मा सूनी आंखों से मेरे दिल तक पैनी दृष्टि डालकर गहरी सांस खींच कर कहती है, 'बेटे, जिसके पल्ले कुछ डाला होता है, उसी से कुछ मिलता है।' सुनकर मेरी आंखें नम हो जाती हैं।



**सभी भारतीय भाषाओं के लिए
यदि कोई एक लिपी आवश्यक
है तो वो देवनागरी ही हो
सकती है।**

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर



संजय कुमार आर्य

दोष किसका?

पीकू ये रहा तुम्हारे सपनों का घर, जिसके लिए तुम मुझसे हमेशा लड़ती रहती थी। यह कहते ही सत्येन्द्र घर में घुसने वाला था कि प्रियंका (जिसे सत्येन्द्र पीकू के नाम से बुलाता था) ने उसे टोका कि सतू तुम मर्द लोग बड़े ही फूहड़ किस्म के आदमी होते हो, घर को नरक बना कर रखते हो। याद है जब मैं तुम्हारे कमरे में पहली बार आयी थी तो तुम्हारा कमरा देखकर मुझे उल्टी होने लगी थी। यह कहकर प्रियंका ने माथे पर चुनरी रखी और दरवाजे पर माथा टेका। घर में घुसने पर प्रियंका ने सत्येन्द्र को समझाना शुरू किया कि घर में किचन का दरवाजा ऐसा होना चाहिए, बेडरूम का दरवाजा इधर होना चाहिए, घर के इस कोने में पर्दा होना चाहिए, वगैरह-वगैरह। सत्येन्द्र इन बातों से दूर सिर्फ यही सोच रहा था कि जब मैं पहली बार प्रियंका से मेट्रो में मिला था तो कितनी मासूम दिखती थी। आंख में चश्मा, कंधे पर किताब वाला बैग और चेहरे पर मासूमियत लिए और आजकल वह मुझे मासूम कम दिखती है। सत्येन्द्र और प्रियंका की मुलाकात दिल्ली के मेट्रो ट्रेन में हुई थी, जहां कुछ स्कूली छात्र मेट्रो में ही 'आपका अपना ख्याल नारी के लिए' विषय पर बातें कर रहे थे। सत्येन्द्र भी वहीं था। लेकिन सत्येन्द्र के नारी के प्रति आशान्वित उत्तर ने प्रियंका का मन मोह लिया और आखिरकार

दोनों ने घर वाले की मर्जी से ही प्रेम विवाह किया। हालांकि शुरू में सत्येन्द्र के घर वालों नाखुश थे। परन्तु सत्येन्द्र की जिद ने हां करने पर मजबूर कर दिया। सत्येन्द्र भारत सरकार के लोक निर्माण विभाग में बतौर क्लर्क नियुक्त हुआ था। शादी के बाद प्रियंका की एक ही ख्वाहिश थी कि अपना भी दिल्ली में घर हो। काफी बचत एवं लोन लेने के बाद सत्येन्द्र एक छोटा सा घर ले सका था। धीरे-धीरे समय बीतता गया, लेकिन परेशानियां बढ़ती गईं। सत्येन्द्र की सैलरी इतनी कम थी कि वह आज के वर्तमान दौर में महँगाई से लड़ने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था, ऊपर से लोन का बकाया अलग।

वह बार-बार यही सोच रहा था कि दिन को वह ऑफिस करेगा और बाकी समय में पार्ट-टाइम जॉब। लेकिन बदकिस्मती ये थी कि वह ये सब ज्यादा समय तक नहीं कर पाया। प्रियंका भी बार-बार कहती थी कि मैंने होटल मैनेजमेंट किया है। क्यों न मैं अपना व्यवसाय या कहीं नौकरी ज्वाइन कर लूं। सत्येन्द्र इसको बार-बार टालता रहा। लेकिन अंत में प्रियंका ने अपना एक रेस्टोरेंट मायके से पैसा लेकर खोल ही लिया। इधर कई सालों तक नियुक्तियां अवरुद्ध होने के कारण ऑफिस में सत्येन्द्र का काम काफी बढ़ गया। सत्येन्द्र जब भी शाम को घर आता तो प्रियंका नहीं



मिलती। प्रियंका रात को दस या ग्यारह बजे तक आती थी, तब तक सत्येन्द्र थक कर सो जाता था। कभी-कभी सत्येन्द्र को माथे या बदन में दर्द होता भी तो उस दर्द को कम करने के लिए मालिश करने के लिए भी प्रियंका नहीं रहती। प्रियंका अपने काम में काफी व्यस्त हो चुकी थी और साथ ही साथ उसका व्यवसाय दिन दुगुनी रात चौगुनी बढ़ने लगा था। इसी व्यस्तता के कारण प्रियंका सत्येन्द्र को भूल सी गई थी। वे एक दिन में केवल एक बार ही सुबह में 'गुड मॉर्निंग' बोल पाते थे। एक दिन सत्येन्द्र ऑफिस नहीं गया और सीधे प्रियंका के रेस्टोरेंट चला गया। उसने समझाया कि पीकू तुम्हारे इस व्यवहार से मुझे जलन सी होने लगी है। आजकल तुम मुझ पर या अपने घर पर ध्यान नहीं दे रही हो। याद है जब मैं पहले ऑफिस से आता था तो तुम मेरा बैग उतार कर चाय पिलाती थी। हम दोनों एक साथ ही खाना खाते थे और आजकल तो खाना खाने की छोड़ दो, बात तक नहीं करती तुम। प्रियंका ने मृदु स्वर में बोला कि सत्तू ऐसी कोई बात नहीं है। मैं वही प्रियंका हूं जो तुम शादी करके लाये थे। बस काम का बोझ इतना बढ़ गया है कि ध्यान ही नहीं रहता। सत्येन्द्र अपने प्रश्न को बार-बार दोहराता रहा। अंत में प्रियंका ने जबाब दिया कि सीधा-साधा ये क्यों नहीं बोल देते कि तुम मुझसे

जलते हो, मेरी तरक्की देखकर। मैंने तुमसे शादी इसलिए की थी क्योंकि तुम्हारी सोच और मेरी सोच में समानता है। तुम नारी का सम्मान करते हो। अपनी कमाई से तो अपना पेट नहीं भर सकते और चले आये मुझे समझाने। चले जाओ यहां से, इससे पहले कि कोई हंगामा हो और मेरे रेस्टोरेंट की बदनामी हो। शाम को बात करते हैं।

उदास और गंभीर मन से सत्येन्द्र घर पहुंचा और मन ही मन ये सोचने लगा कि प्रियंका तो पहले ऐसी नहीं थी। अचानक ये क्या हो गया इसे? घर की एक-एक चीज उसे काटने को दौड़ रही थी। शाम को प्रियंका ने एक पेपर थमा दिया जिसमें उसके हस्ताक्षर थे। सत्येन्द्र ने जब देखा तो वह भौचका सा रह गया। ये तो तलाक पेपर था। प्रियंका ने समझाया कि देखो सत्तू तुम्हारे लिए मैं अपना काम नहीं छोड़ सकती, क्योंकि इसी काम ने मुझे समाज में प्रतिष्ठा दिलाई है। इसलिए इस पर हस्ताक्षर कर दो और आराम से जिंदगी गुजार लो। मैं भी अपने मायके चली जाती हूं और अपना व्यवसाय वहीं से रोज आकर संभाल लिया करूंगी। सत्येन्द्र प्रियंका से बहुत प्यार करता था। वह किसी भी कीमत पर प्रियंका से अलग नहीं होना चाहता था। लेकिन प्रियंका की जिद ने हस्ताक्षर करने पर मजबूर कर दिया। दोनों अपनी बाकी की जिंदगी गुजारने का प्रयास करने लगे। सत्येन्द्र एकदम लापरवाह-सा रहने लगा। उधर प्रियंका अपने काम में इतनी व्यस्त हो गई कि उसे अपनी सेहत का भी ख्याल न रहा।

देखते-देखते बीस साल बीत गए। प्रियंका के रेस्टोरेंट की संख्या एक से बढ़कर बारह हो गई और दिल्ली में उसकी एक अलग पहचान बन चुकी



थी। सत्येन्द्र भी अब उम्र के तीसरे पड़ाव में पहुंच चुका था। एक बार पुनः उसी मेट्रो में सत्येन्द्र और प्रियंका की मुलाकात हो गई। सत्येन्द्र बोला, “पीकू कैसी हो?”

प्रियंका ने तुरंत जवाब दिया कि आपको पीकू कहने का कोई हक नहीं है, मेरा नाम प्रियंका है। इतना कहते ही वह मेट्रो से उतरने के लिए जैसे ही अपनी सीट से खड़ी हुई, चक्कर खाकर गिर पड़ी। सत्येन्द्र प्रियंका को सम्भालते हुए डॉक्टर के पास ले गया। डॉक्टर साहब ने नसीहत दी कि इनको कमजोरी हो गई है, हो सके तो समय पर खाना और आराम दीजिए। प्रियंका के गालों पर भी झुरियां आ गई थी, जैसे वह सत्येन्द्र से दस साल बड़ी हो। सत्येन्द्र प्रियंका को अपने घर ले आया। प्रियंका को होश आने के बाद जब उसने घर की दुर्दशा देखी तो उसे उल्टी हो गई। प्रियंका तपाक से बोल उठी कि तुम मर्द भी न सिर्फ अपना मुँह चमकाकर रखोगे, बाकी जगह को नरक बनाकर रखते हो। देखो तो स्वर्ग जैसे घर को तुमने कचरा बना कर रख दिया है। ये फोटो यहां पर किसने

लगाई, ये तो वहां पर होना चाहिए था। तुम्हारे घर में से तो बदबू आ रही है, घर को कभी धोते नहीं हो क्या? अब बोलते क्यों नहीं—————?? और हां, मुझे डॉक्टर के पास ले जाने के लिए शुक्रिया!

इतने सारे प्रश्न सुनकर सत्येन्द्र के मुँह से बस यह बात निकली की नरक तो मैंने बना दिया, लेकिन स्वर्ग बनाने वाली तुम जो पास नहीं हो? इतना कहने के बाद दोनों की आँखों में आंसू आ गए। प्रियंका ने आंसू पोंछते हुए कहा कि तुमने शादी नहीं की। सत्येन्द्र बोला कि दूसरी पीकू मिली ही नहीं। दोनों हँस पड़े!

अब दोनों को समझ नहीं आ रहा था कि उन्होंने जिंदगी के 20 साल जो अकेले काटे हैं, उसका दोष वे किसको दें???

सरकार को ?

रेस्टोरेंट को ?

अपने आप को ? या

महंगाई को ?

◆ ——— • • ◆ • • ——— ◆



कार्यालय-समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियां

1. इस कार्यालय की फुटबाल टीम ने दिनांक 09-11-2017 तक चण्डीगढ़ आई ए एण्ड एडी नॉर्थ जोन फुटबाल टूर्नामेंट में भाग लिया तथा प्रथम स्थान प्राप्त किया। आई ए एण्ड एडी इंटर-जोनल फुटबाल टूर्नामेंट में भाग लिया।
2. श्री विजय आहुजा, वरिष्ठ लेखाकार ने दिनांक 21 से 28 फरवरी 2018 तक केरल में आयोजित 66वीं वरिष्ठ राष्ट्रीय वॉलीबाल चैम्पियनशिप में रेफरी के स्तर पर भाग लिया।
3. श्री अमित काकड़िया तथा श्री कनवरवीर सिंह रैना वरिष्ठ लेखाकार ने दिनांक 27.01.2018 से 05.02.2018 तक विजयवाड़ा में भारतीय सिविल सर्विस क्रिकेट टूर्नामेंट 2017-18 में क्रमशः खिलाड़ी व कोच के स्तर पर भाग लिया तथा इस टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।
4. श्री विजय आहुजा तथा श्री अमित काकड़िया, वरिष्ठ लेखाकारों ने भारतीय सिविल सर्विसज वॉलीबाल टूर्नामेंट- 2017-18 में मैनेजर व कोच के स्तर पर भाग लिया तथा आरएसबी चण्डीगढ़ टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।
5. इस कार्यालय के हॉकी खिलाड़ियों श्री दिनेश मान, श्री ध्यान सिंह, श्री संदीप सिंह, श्री जगरूप सिंह, श्री रणबीर सिंह, श्री चंदीप सिंह व श्री गुरदीप सिंह वरिष्ठ लेखाकारों ने रांची, झारखण्ड में आयोजित भारतीय सिविल सर्विसेज हॉकी टूर्नामेंट 2017-18 में भाग लिया तथा तीसरा स्थान प्राप्त किया।
6. श्री कशिश तथा श्री गौरव देसवाल, लिपिकों ने इंडिया ऑपन 2018 में तथा अखिल भारतीय सीनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट- 2018 में भाग लिया।
7. श्री अंकित कौशिक, व.ले. ने 23वीं भारतीय जे.पी. अत्रे मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया।
8. श्री जसकरणदीप सिंह और श्री अर्पित सिंह, लिपिकों ने अंतर्राज्य टी-ट्वेंटी सैय्यद मुस्ताक अखिल भारतीय ट्राफी के कैम्प में भाग लिया।
9. श्री अंकित कौशिक, व.ले. व श्री अर्पित सिंह, लिपिक क्रिकेट खिलाड़ियों ने कोचिंग कैंप एवं 14वीं डी.वाई. पाटिल टी-ट्वेंटी अखिल भारतीय टूर्नामेंट में भाग लिया।
10. श्री जगरूप सिंह, व.ले., श्री ध्यान सिंह, व.ले. व श्री दिनेश मान ने सीएजी की टीम की तरफ से दिल्ली में आयोजित 28वीं लाल बहादुर शास्त्री हॉकी टूर्नामेंट में भाग लिया।
11. श्री संदीप सिंह ने 8वीं भारतीय वरिष्ठ पुरुष राष्ट्रीय हॉकी चैम्पियनशीप 2018 में भाग लिया।
12. श्री हरप्रीत सिंह, कल्याण सहायक तथा श्री उर्मिंदर पाल सिंह, वरिष्ठ लेखाकार ने कुरुश्रेत्र में आयोजित 55वीं नेशनल रोलर स्केटिंग चैम्पियनशिप में मुख्य रैफरी व मैनेजर के तौर पर भाग लिया।



नियुक्तियां

(प्रशासन-1 के अनुसार 01-10-2017 से 31-03-2018)

क्रम संख्या	नाम (सर्व श्री / श्रीमती)	पदनाम	नियुक्ति की तिथि
1.	कशिश	लिपिक	24.10.2017
2.	अर्पित सिंह	लिपिक	31.10.2017
3.	आकाश वशिष्ठ	लिपिक	05.12.2017
4.	जसकरणदीप सिंह	लिपिक	07.12.2017
5.	गौरव देसवाल	लिपिक	19.12.2017
6.	धनराज लवाड़िया	डी.ई.ओ.	28.02.2018
7.	गौरव कश्यप	डी.ई.ओ.	28.02.2018
8.	मोहित कुमार	डी.ई.ओ.	05.03.2018
9.	राहुल दयाल	डी.ई.ओ.	06.03.2018
10.	अजय मीणा	डी.ई.ओ.	13.03.2018
11.	वसुंधरा डबास	लेखाकार	21.03.2018
12.	प्रशान्त शर्मा	लेखाकार	21.03.2018
13.	हिमान्शु बजाज	लेखाकार	22.03.2018
14.	अतुल मदान	लेखाकार	22.03.2018
15.	बनवारी लाल मीणा	लेखाकार	22.03.2018
16.	राजमोहन मीणा	लेखाकार	22.03.2018
17.	अनुश्री कुमार	लेखाकार	22.03.2018
18.	सुमन मीणा	लेखाकार	26.03.2018
19.	आलोक कँवत	लेखाकार	26.03.2018
20.	नमो नारायण सिंघल	लेखाकार	26.03.2018
21.	प्रियंका	लेखाकार	26.03.2018
22.	पंकज कुमार जोशी	लेखाकार	26.03.2018
23.	सावन कुमार शर्मा	लेखाकार	26.03.2018
24.	प्रविंदर	लेखाकार	07.03.2018
25.	सरजीत	लेखाकार	27.03.2018
26.	कुलदीप	लेखाकार	27.03.2018
27.	अदीति बर्नवाल	लेखाकार	28.03.2018
28.	अमरदीप सिंह	लेखाकार	28.03.2018
29.	पियूष कुमार पाठक	लेखाकार	28.03.2018
30.	चिराग मीणा	लेखाकार	28.03.2018

पदोन्नतियां

सहायक लेखा अधिकारी से लेखा अधिकारी के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	पदोन्नति की तिथि
1.	जतिंदर पाल मलिक	01.12.2017
2.	जसविंदर गिल	01.01.2018
3.	नरेश कुमार	01.02.2018

सेवानिवृत्तियां

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	बदरी प्रसाद, व.ले.	31.10.2017
2.	धर्म सिंह, व.ले.	31.10.2017
3.	जीवन आशा, व.ले.अ.	30.11.2017
4.	राजिन्द्र कुमार जिंदल, स.ले.अ.	30.11.2017
5.	दलजीत कौर-3, व.ले.	30.11.2017
6.	भाई लाल, व.ले.	30.11.2017
7.	नरिन्द्र कुमार-1, व.ले.	30.11.2017
8.	प्रेम पाल, व.ले.अ.	31.12.2017
9.	बलजीत सिंह महल, व.ले.	31.12.2017
10.	सुदर्शन कुमार सूद, व.ले.	31.12.2017
11.	नछतर कौर, व.ले.अ.	31.01.2018
12.	जसबीर कौर, ले.अ.	31.01.2018
13.	निर्मल कांता, व.ले.	31.01.2018
14.	सुशील कुमार, व.ले.	31.01.2018
15.	शकुंतला देवी भाटिया, व.ले.	31.01.2018
16.	लता रानी, व.ले.	28.02.2017
17.	बीना रानी, व.ले.अ.	31.03.2018
18.	सतविन्द्र सिंह, ले.अ.	31.03.2018
19.	मुरली धर जोशी, व.ले.	31.03.2018

स्वैच्छिक सेवानिवृत्तियां

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	मदन लाल-6, व.ले.	04.10.2017
2.	अनिता शर्मा, व.ले.	30.11.2017
3.	मलकियत सिंह, चालक	02.01.2018

सभी सेवानिवृत्त अग्रज साथियों की दीर्घायु तथा उनके सुखी, स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन के लिए 'अंकुर' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

अलविदा

श्री संजीव कुमार जी, एम.टी.एस. दिनांक 21.12.2017 को अपनी जीवन-यात्रा पूरी कर उस अखण्ड ज्योति में समा गये। अंकुर परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति भाव-भीनी श्रद्धांजलि।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य
के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत
नहीं हो सकता।

—डॉ. राजेंद्र प्रसाद

गणतंत्र दिवस समारोह

गणतंत्र दिवस पर कार्यालय के लेखा परिवार को संबोधित करते हुए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार महोदय



ध्वजारोहण





चंडीगढ़ में स्थित कैपिटल कॉम्प्लेक्स



राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़— 160017